सत्यमेव जयते

गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

26 जनवरी 2007 (माघ 6, शक संवत् 1928)

26 January 2007 (6 Magha, Saka Samvat 1928)

2 26 Jan 2007

कार्यक्रम

0957 बजे भारत के राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि, रूसी संघ के माननीय राष्ट्रपति के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि का स्वागत।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति और मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों और रक्षा सचिव का परिचय।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान। प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि की, उनके आसनों की ओर अगवानी।

राष्ट्रीय ध्वज का फहराया जाना। राष्ट्रपति के अंगरक्षकों द्वारा राष्ट्रीय सलामी। बैंड द्वारा राष्ट्रीय गान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

गणतंत्र दिवस परेड का शुभारंभ।

सांस्कृतिक प्रस्तुति।

मोटर साइकिल पर करतब।

विमानों द्वारा सलामी।

राष्ट्रपति के अंगरक्षकों द्वारा राष्ट्रीय सलामी।

राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि के साथ राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

PROGRAMME

0957 hours The President, accompanied by the Chief Guest, The President of Russian Federation, arrives in State.

The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Utpadan Rajya Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the rostrum. The Prime Minister escorts the President and the Chief Guest to their seats.

The National Flag is unfurled. The President's Body-Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant follows.

Motorcycle Display follows.

Fly-past follows.

The President's Body-Guard presents the National Salute.

The President, accompanied by the Chief Guest, departs in State.

परेड–क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलिकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर
परेड उप–कमांडर
परमवीर चक्र और अशोक चक्र विजेता

सेना

सवार जत्था

61 रिसाला

मैकेनाइज्ड जत्थे

टैंक टी.–72 एम1 अजेय

155 मि.मी. एफएच 77 बोफोर्स

पिनाका लांचर

टीसी रिपोर्टर रडार

मोबाइल डिकंटेमिनेशन वाहन

पीएमएस पुल

मोबाइल बेस ट्रांसरिसीवर स्टेशन

ट्रांसपोर्टेबल आर्मी वाइड एरिया नेटवर्क (अवान) नोड

आई.सी.वी. बी.एम.पी.-II

आधुनिक हल्के हेलिकॉप्टरों द्वारा सलामी।

THE ORDER OF MARCH

Showering of Flower Petals by IAF Helicopters

Parade Commander
Parade Second-in-Command
Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

ARMY

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanised Columns

Tank T-72 M1 Ajeya

155 mm FH 77 Bofors

Pinaka Launcher

TC Reporter Radar

Mobile Decontamination Vehicle

PMS Bridge

Mobile Base Transreceiver Station

Transportable Army Wide Area Network (AWAN) Node

ICV BMP-II

Fly Past by Advanced Light Helicopters.

मार्च करती हुई टुकड़ियां

पैरा रेजिमेंट

ब्रिगेड ऑफ गार्ड्स

आर्टिलरी सेंटर, हैदराबाद
मद्रास रेजिमेंटल सेंटर
} बैंड धुन 'सिंहगढ़'

राजपूत रेजिमेंट

जाट रेजिमेंट

सिख रेजिमेंटल सेंटर
सिख लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंटल सेंटर
} बैंड धुन 'वीर भारत'

सिख रेजिमेंट

डोगरा रेजिमेंट

डोगरा रेजिमेंटल सेंटर
गढ़वाल रेजिमेंटल सेंटर
} बैंड धुन 'आशा'

बिहार रेजिमेंट

जम्मू एवं कश्मीर लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंट

जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स रेजिमेंटल सेंटर
जम्मू एवं कश्मीर लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंटल सेंटर
} बैंड धुन 'सेना का गौरव'

प्रादेशिक सेना (मराठा)

झांकियां :
(i) आर.वी.सी. (रिमाउंट और वेटेरिनरी कोर)
(ii) सैन्य विश्व खेल, 2007

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड
मार्च करती हुई टुकड़ी
} बैंड धुन 'जय भारती'

झांकी : 'दक्षता और युद्धक शक्ति तंत्र'

Marching Contingents

The PARA Regiment

The Brigade of Guards

The Artillery Centre, Hyderabad
The Madras Regimental Centre
} Band playing 'Singarh'

The Rajput Regiment

The JAT Regiment

The SIKH Regimental Centre
The SIKH LI Regimental Centre
} Band playing 'Vir Bharat'

The SIKH Regiment

The Dogra Regiment

The Dogra Regimental Centre
The Garhwal Regimental Centre
} Band playing 'Asha'

The Bihar Regiment

The Jammu and Kashmir LI Regiment

The JAK Rifles Regimental Centre
The JAK LI Regimental Centre
} Band playing 'Sena Ka Gaurav'

The Territorial Army (Maratha)

Tableaux :
(i) RVC (Remount and Veterinary Crops)
(ii) Military World Games, 2007

NAVY

Naval Brass Band
Marching Contingent
} Band playing 'Jai Bharti'

Tableau : 'Networking for Efficiency and Combat Power'

वायु सेना

वायु सेना बैंड : बैंड धुन 'टाइगर हिल'
मार्च करती हुई टुकड़ी

वाहन जत्थे

यू.ए.वी. (मानवरहित एरियल वाहन)
इन्द्र पीसी-II रडार

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन–उपस्कर जत्थे

ब्रह्मोस (सेना संरूपण)
झांकी : ब्रह्मोस शिप मॉक–अप (नौसैन्य संस्करण)
पुल बनाने वाला टैंक अर्जुन पर
पूर्व टैंक
नामिका पर नाग
आकाश शस्त्र प्रणाली
शस्त्र खोजी रडार (डब्ल्यु.एल.आर.)
झांकिया : सीमा चौकसी

पूर्व सैनिक

58 जी.टी.सी. और सी.एम.पी. स्कूल एवं केंद्र } बैंड धुन 'वीर सिपाही'

पूर्व सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

अर्द्ध–सैन्य तथा अन्य सहायक सिविल बल

सीमा सुरक्षा बल : बैंड धुन 'विजय भारत'
सीमा सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

सीमा सुरक्षा बल के ऊंटों की टुकड़ी
सीमा सुरक्षा बल के ऊंट : बैंड धुन 'हम हैं सीमा सुरक्षा बल'

असम राइफल्स की मार्च करती हुई टुकड़ी
असम राइफल्स : बैंड धुन 'असम राइफल्स का गीत'

तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल : बैंड धुन 'सेवा भक्ति का यह प्रतीक'
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

AIR FORCE

Air Force Band : Band playing 'Tiger Hill'
Marching Contingent

Vehicular Columns

UAV (Unmanned Aerial Vehicle)
Indra PC-II Radar

DRDO EQUIPMENTS COLUMNS

Brahmos (Army configuration)
Tableau : BrahMos Ship Mock-up (Naval Version)
Bridge Layer Tank (BLT) on Arjun
Ex-Tank
Nag on Namica
Akash Weapon System
Weapon Locating Radar (WLR)
Tableau : Border Surveillance

EX-SERVICEMEN

The 58 GTC and CMP School and Centre } Band playing 'Veer Sepahee'

Ex-Servicemen's Marching Contingent

PARA-MILITARY AND OTHER AUXILIARY CIVIL FORCES

BSF : Band playing 'Vijay Bharat'
BSF Marching Contingent

BSF Camel Contingent
BSF Camel : Band playing 'Hum Hain Seema Suraksha Bal'

Assam Rifles Marching Contingent
Assam Rifles : Band playing 'Assam Rifles' Songs'

Coast Guard Marching Contingent

CRPF : Band playing 'Seva Bhakti Ka Yah Prateek'

CRPF Marching Contingent

एल्पाइन ड्रेस में भारत–तिब्बत सीमा पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी	ITBP Marching Contingent in Alpine Dress
भारत–तिब्बत सीमा पुलिस : बैंड धुन 'हम सरहद के सेनानी'	ITBP : Band playing 'Hum Sarhad Ke Senani'
भारत–तिब्बत सीमा पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी	ITBP Marching Contingent
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल : बैंड धुन 'अपने वतन के हम पासवां'	CISF : Band playing 'Apne Vatan Ke Hum Paasvan'
केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी	CISF Marching Contingent
सशस्त्र सेना बल : बैंड धुन 'जोश भरा है सीने में'	SSB : Band playing 'Josh Bhara Hai Sine Main'
सशस्त्र सेना बल की मार्च करती हुई टुकड़ी	SSB Marching Contingent
रेलवे सुरक्षा बल : बैंड धुन 'कदम–कदम बढ़ाए जा'	RPF : Band playing 'Kadam-Kadam Badhaye Ja'
रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी	RPF Marching Contingent
दिल्ली पुलिस : बैंड धुन 'दिल्ली पुलिस'	Delhi Police : Band playing 'Delhi Police'
दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी	Delhi Police Marching Contingent

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)

NATIONAL CADET CORPS (NCC)

बालक (रा.कै.को.) : बैंड धुन 'कदम–कदम बढ़ाए जा'	Boys (NCC) : Band playing 'Kadam-Kadam Badhaye Ja'
सीनियर डिवीजन के बालकों की मार्च करती हुई टुकड़ी	Senior Division Boys Marching Contingent
बालिकाएं (रा.कै.को.) : बैंड धुन 'सारे जहां से अच्छा'	Girls (NCC) : Band playing 'Sare Jahan Se Achchha'
सीनियर डिवीजन की बालिकाओं की मार्च करती हुई टुकड़ी	Senior Division Girls Marching Contingent

राष्ट्रीय सेवा योजना

NATIONAL SERVICE SCHEME

सामूहिक पाइप और ड्रम : बैंड धुन 'मिली जुली'	Mass Pipes and Drums : Band playing 'Mili Juli'
राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी	National Service Scheme Marching Contingent

सांस्कृतिक प्रस्तुति

THE CULTURAL PAGEANT

झांकियां : छब्बीस	**TABLEAUX** : Twenty Six
हाथियों पर सवार राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे	**National Bravery Award Winning Children on Elephants**

बच्चों की प्रस्तुति

दिल्ली स्कूलों के बालक और बालिकाएं
बैंड धुन 'सारे जहां से अच्छा'
ध्वज वाहक – (बालक और बालिकाएं)

स्कूली बच्चों की प्रस्तुतियाँ : दस

वंदे मातरम्
नटवरी नृत्य
आओ स्कूल चलें
देवरी बिहू
कठपुतली नृत्य
खरिंग खरक फेचक
एकता की रंगोली
गैडी नृत्य
कन्नीयारकली
राष्ट्र–मण्डल खेल

मोटर साइकलों पर करतब : श्वेत अश्व

वायुयानों द्वारा सलामी*

गुब्बारे उड़ाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।

*मौसम अनुकूल रहने पर।

CHILDREN'S PAGEANT

Delhi School (Boys and Girls)
Band playing 'Sare Jahan Se Achchha'
Flag Bearers – (Boys and Girls)

School Children Items : Ten

Vande Matram
Natvari Nritya
Aao School Chalein
Deori Bihu
Puppet Dance
Kharing Kharak Pheichak
Ekta Ki Rangoli
Gedi Nritya
Kanniyarkali
Commonwealth Games

Motorcycle Display : Shwet Ashw

FLY-PAST*

Release of Balloons : Indian Meteorological Department.

*If weather conditions permit.

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज, भारत अपना 58वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति, हमारी सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और भारत के गौरवशाली अतीत की प्रतीकात्मक प्रगति की एक झलक प्रस्तुत करती है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति नागरिकों के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है।

रंगबिरंगी झांकियों का क्रम–विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं का चित्रण करता है। इन झांकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु–शिल्पीय धरोहर को दर्शाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating the 58th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress symbolising India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

An array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.

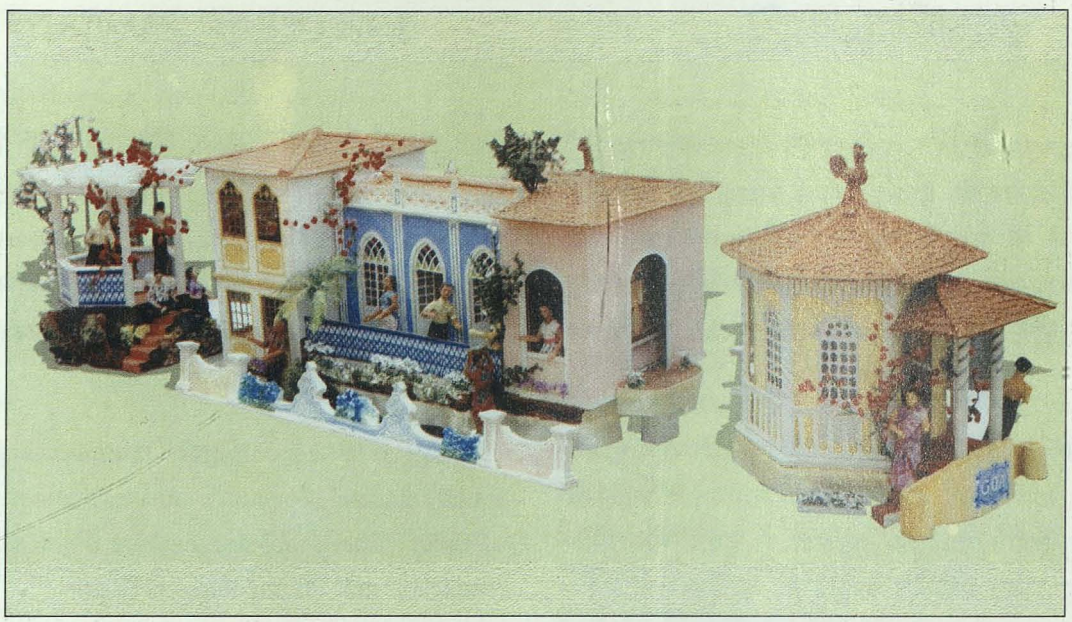

गोवा के घर

यद्यपि गोवा में आधुनिकता वास्तुकला धीरे–धीरे प्रवेश कर रही है फिर भी इसका गौरवमय अतीत इसके वास्तुशिल्पीय ताने–बाने में प्रतिबिंबित होता है। शिल्पकला न केवल उनके गौरवशाली अतीत से जुड़ी है, बल्कि इसका संबंध गोवावासियों की जीवन शैली से भी है जिस पर उन्हें गर्व है।

एक विशाल मुर्गे का लघु रूप, जो पुराने जमाने के गोवावासियों के घरों के लिए आम बात थी, ट्रैक्टर पर दिखाया गया है। मुर्गा उनके लिए प्रतीक था क्योंकि घर में मुर्गे की बांग से नए दिन की शुरूआत होती थी। विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों समेत गोवा का एक घर साम्प्रदायिक सद्भाव तथा अनेकता में एकता का चित्रण करता है जो वर्षों से विद्यमान तथा कालपरीक्षित है। इसे ट्रेलर में दिखाया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में, आयोनिक, कोरिन्थियन तथा डोरिक स्तम्भों को दर्शाया गया है जो गोवा के अधिकांश घरों तथा पूजा स्थलों के भवनों के अग्रभाग में आज भी विद्यमान हैं। गोवा की झांकी में गोवा के घरों के खास पहलू को दिखाया गया है।

Houses of Goa

In Goa, the glorious past still resonates in its's architectural build up, although modern architecture is slowly creeping in. Not only does the architecture hold on to the glories of the past, but also the lifestyle of the Goans of which they are very proud.

A miniature of a large rooster that was common to many old Goan houses is shown on the tractor. The rooster was symbolic because it was the call of the rooster that resonated through the house and heralded a new day. A Goan house with people from different cultural background depicts the communal harmony and unity in diversity, which exists for so many years and has stood the test of time, is shown in the trailer. In the rear part, Ionic, Corinthian and Doric pillars which exist in the facade of the most Goan houses and structures of worship, are shown. The tableau of Goa showcases the special aspect of Goan houses.

10

प्रकृति का सदुपयोग

घने जंगल, गहरी कंदराओं तथा नदी घाटियों में, जहां पर सड़क और पुलों का निर्माण करना दुष्कर कार्य है, जहां पैदल चलना ही एक बेहतरीन विकल्प है, से युक्त हिमालय की पत्काई रेंजों में बसे अरुणाचल प्रदेश के लोगों ने परम्परागत बेंत के झूलते पुलों के माध्यम से एक गांव को दूसरे गांव से जोड़ने का वीरतापूर्ण कार्य किया है। ये पुल स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों, विशेषकर बेंतों तथा बांसों का इस्तेमाल करके परम्परागत विशेषज्ञता के साथ बनाए जाते हैं।

झूलते पुलों का मुख्य आधार बेंत, आंशिक रूप से त्रिकोणाकार मजबूत लट्ठों पर रखे शहतीरों पर टिके होते हैं तथा इन्हें आगे बढ़ाकर परम्परागत रूप से स्थित एक पेड़ अथवा पेड़ों के झुण्डों से बांधा जाता है। तब अन्य सिरों को नदी में बहा दिया जाता है तथा इन्हें इसी प्रकार से सुरक्षित किया जाता है। फिर मुख्य गेटिसों को मजबूती प्रदान करने के लिए कुछ छोटे–छोटे गेटिस लगाए जाते हैं। तत्पश्चात् इसी सामग्री की बनी कुछ लपेटनों को कुछ गज के अंतराल से टांगा जाता है। फिर इन्हीं रस्सियों से सीढ़ी के पायदान बनाए जाते हैं। इस प्रकार पैदल यात्रियों के लिए पुल तैयार हो जाता है। अरुणाचल प्रदेश की झांकी में इस क्षेत्र की समृद्ध वनस्पति और प्राणी–जगत, परम्परागत हुनर तथा राज्य के लोगों की जीवन–शैली का चित्रण किया गया है जहां पारिस्थितिकी को अस्त–व्यस्त किए बिना प्रकृति का सदुपयोग किया जाता है।

अरुणाचल प्रदेश

Harnessing The Nature

Nestled in the Patkai Ranges of Himalaya with dense forest, deep gorges and river valleys, where construction of roads and bridges ais a Herculean task and the foot march is the best alternative, the people of Arunachal Pradesh brave to inter-connect one village to other through traditional cane suspension brides. These bridges are constructed with locally available materials especially cane and bamboos and with traditional expertise.

The canes forming the main support of suspension bridge are partly thrown across beams supported on triangular shaped strong timbers, stretched further and fastened to a tree or group of trees conveniently situated. The other ends are then floated across the river and secured in the same way and then some minor suspenders are attached to strengthen the main suspenders. Thereafter some coils of the same materials are hung at a gap of few yards. Foot rests are then woven with the same strips. The bridge is now ready for pedestrian. The tableau of Arunachal Pradesh depicts the rich flora and fauna of the region, the traditional workmanship and the life-style of the people of the state where the nature is harnessed without disturbing the ecology.

Arunachal Pradesh

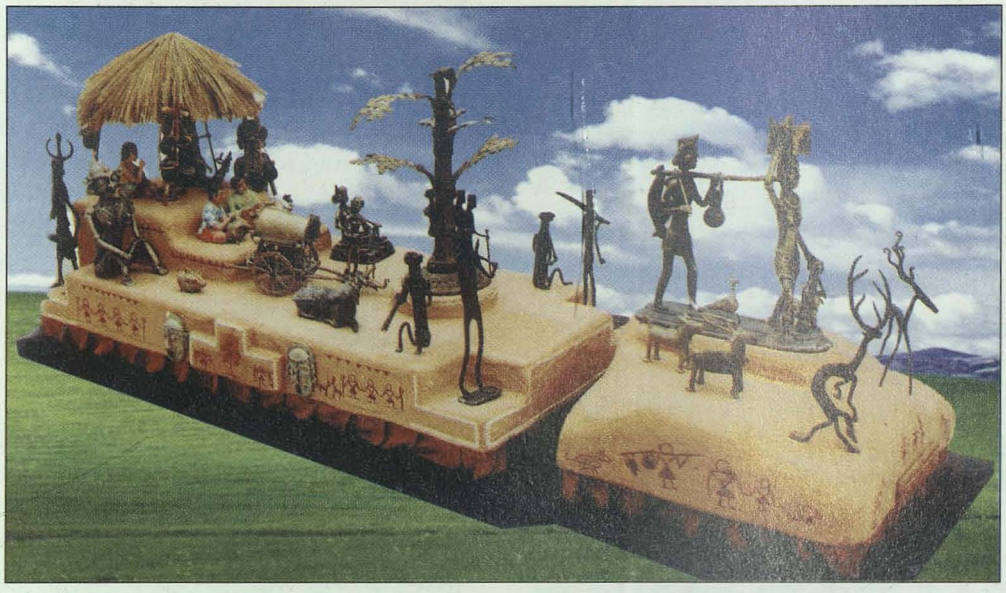

ढोकरा शिल्प

छत्तीसगढ़, राज्य की जनजातियों की एक पुरानी परंतु लुप्त हो रही ढोकरा दस्तकारी को चित्रित करता है। छत्तीसगढ़ की परम्परागत हस्तकला की राज्य के लोगों की जीवन–शैली में एक अहम भूमिका है। घंटा–धातु तथा अयस्क हस्तकला राज्य की महत्वपूर्ण दस्तकारियां हैं। घंटा–धातु कला के रूप में विख्यात 'ढोकरा' हस्तकला ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। बस्तर के घडवा तथा रायगढ़ के झार लोग 'ढोकरा' कला को अपनाते हैं। दस्तकारों के लिए कला निर्माण हेतु प्राकृतिक वस्तुएं प्रेरणास्रोत हैं। मोम की पट्टियों से युक्त मिट्टी के अभ्यंतरों की जटिल बनावट तथा इसके बाद मिट्टी और शहद के मिश्रण से बाहरी परत डालना इसमें शामिल है। धीरे–धीरे मोम पिघल जाता है तथा इस प्रकार बनी गुहिका में तरल धातु भरी जाती है। जब यह ठोस आकार लेती है तो दस्तकार बाहरी मिट्टी के आवरण को सावधानी से हटाकर अपनी कलाकृति के सौंदर्य का रहस्योद्घाटन करता है। इस धातु को भट्टी में तपाकर लोहार के हथौड़े से आनम्य बनाया जाता है। हथौड़े और चिमटे जैसे प्रारंभिक औजारों का चीजों को कलात्मक रूप में गढ़ने के लिए इस तरह इस्तेमाल किया जाता है कि कोई जोड़ नहीं बन पाए। आखिर में किया गया रंग–रोगन इसे आकर्षक चमक प्रदान करता है। छत्तीसगढ़ के दस्तकार इस हस्तकला के माध्यम से देवी–देवताओं, मृग, मोर तथा पशुओं की प्रतिमाएं तैयार करते हैं। इस दस्तकारी की सहायता से दस्तकार देवी–देवताओं की मूर्तियां तैयार करते हैं।

छत्तीसगढ़ की झांकी में हस्तकला के विशिष्ट डिजाइन तथा आकार दिखाए गए हैं जो भावनाओं और विचारों में छिपी अभिव्यक्ति तथा कलाकार की कल्पना और हुनर को परिलक्षित करते हैं।

छत्तीसगढ़

Dhokra Craft

Chhatisgarh presents an old but dying Dhokra Craft of the tribes of State. Traditional crafts of Chhattisgarh play an important role in the life style of the people of the State. Bell metal and iron crafts are the prominent crafts of the State. 'Dhokra' craft, known as the bell metal art, has earned national and international acclaim. The Ghadwas of Bastar and Jharas of Raigarh practice the 'Dhokra' art with the hollow casting. The natural objects are the source of inspiration for the craftsmen in its creation. It involves intricate patterning of a clay core with wax ribbons and then coating it carefully with a mix of clay and hay. The wax is subsequently melted off and the cavity formed is filled with molten metal. When this solidifies, the craftsman reveal the beauty of his creation by cautiously breaking open the outer clay shell. The metal is heated in furnace to make it pliable under the hammer of a blacksmith. Rudimentary tools of hammer and tongs are used to skilfully forge the items in such a way that no joints are created. A final varnish provides the attractive sheen. Craftsmen of Chhattisgarh prepare statues of god-goddess, deer, peacock and animals through this craft. Craftsmen prepare statues of god-goddess with the help of this craft.

The tableau of Chhattishgarh showcases the distinct design and shape of the craft reflecting the inherent expressions of feelings and thoughts and it's creator's imagination and skill.

Chhattisgarh

12

कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान

इस उद्यान का नाम जाने–माने संरक्षणवादी जिम कार्बेट के नाम पर पड़ा है तथा इसकी स्थापना 8 अगस्त, 1936 को हुई थी। कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान भारतीय उप–महाद्वीप का प्राचीनतम् राष्ट्रीय उद्यान है। *तराई–भाब्बर* क्षेत्र में हिमालय की पहाड़ियों में स्थित यह राष्ट्रीय उद्यान उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल तथा पौड़ी गढ़वाल जिलों के 520.82 वर्ग कि.मी. से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है।

रामगंगा तथा इसकी सहायक नदियां कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान की जीवन रेखाएं हैं और इसे मनोहारी भू–आकृतियां तथा प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान करती हैं। गर्मियों के दौरान ढिकाला चौर में एशियाई हाथियों के बड़े झुण्ड देखने को मिलते हैं। दुनिया में चीतों का घनत्व सबसे अधिक इस उद्यान में है। राष्ट्रीय उद्यान, पक्षी निहारने वालों के लिए स्वर्ग है क्योंकि पक्षियों की 580 से भी अधिक प्रजातियां यहां पाई जाती हैं। सांबर हिरण तथा जंगली सूअर साल के जंगलों में खुले घूमते हैं, मगरमच्छ तथा घड़ियालों को रामगंगा में महासीर मछली पर पलते देखा जा सकता है। उत्तराखण्ड की झांकी में सत्तर वर्ष के सफल संरक्षण के परिणामों की झलकियां हैं। राष्ट्रीय पशु, *बाघ* को बचाने के भारत के प्रयासों में अपने योगदान पर कार्बेट को गर्व है।

उत्तराखण्ड

Corbett National Park

Named after a legendary conservationist Jim Corbett and established on 8th August 1936, Corbett National Park is the oldest National Park of the Indian Sub-continent. Situated in the foothills of Himalayas in the *Terai Bhabbar* tract, the Corbett National Park is spread over 520.82 Sq. Kms. in the districts of Nainital and Pauri Garhwal in the state of Uttarakhand.

Ramganga and its tributaries form the lifeline of Corbett National Park and impart enchanting landscape and beauty. Large herds of Asiatic Elephants can be seen in Dhikala Chaur during summers. Corbett has one of the highest tiger densities reported anywhere in the world. The National Park is a birdwatchers' paradise as over 580 species of birds are found here. 'Sambur', the Barking Deer and the wild boars roam freely in the Sal forests, crocodile and Gharial can been seen feeding on the Mahaseer fish in Ramganga. The tableau of Uttarakhand, highlights the results of seventy years of successful conservation. Corbett is proud of its contribution to India's efforts to save its national animal, the Tiger.

Uttarakhand

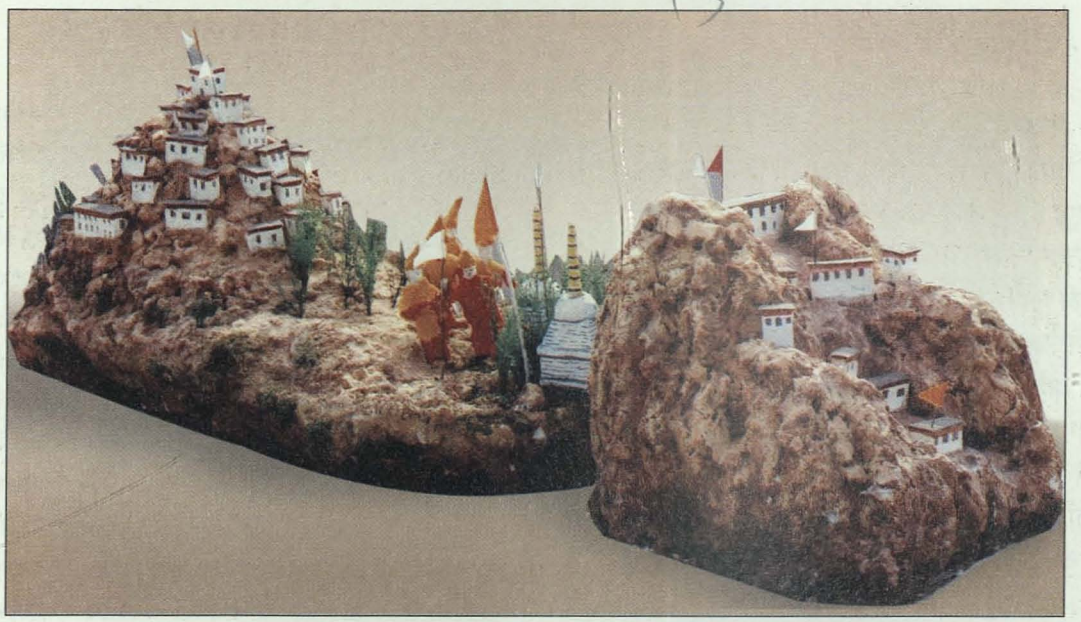

बौद्ध मठ

पश्चिमी हिमालय की छटा बिखेरती पर्वत श्रेणियों में अवस्थित हिमाचल प्रदेश को विभिन्न उपनामों यथा, भारत की 'देवभूमि', 'वीरभूमि' तथा 'सेब कटोरा' भी कहा जाता है।

हिमाचल प्रदेश की झांकी में वृहद् हिमालय की स्पीति घाटी, जो कई महीनों तक बर्फ से ढकी रहती है, में स्थित 'ढंकार' तथा 'की' मठों का चित्रण किया गया है। 'नोनोस' के अधीन कभी स्पीति राज्य की राजधानी रही *ढंकार* का समुद्री तल से 3870 मीटर से भी अधिक की ऊंचाई पर निर्माण किया गया था। यह मठ स्पीति नदी के बांए किनारे पर एक बर्फबारी से युक्त कछारी कगार वाली खतरनाक एवं प्रपाती अवस्थिति के तर्क को चुनौती देता है। 'हवा में महल' के रूप में विख्यात 'ढंकार' मठ को झांकी के अग्रभाग में दर्शाया गया है। सबसे ऊंचे कक्ष की छत पर, पहुंचने पर किसी व्यक्ति को दूसरी दुनिया में होने की नैसर्गिक अनुभूति होती है। इस घाटी में अचेतन भक्ति का माहौल व्याप्त है। झांकी के पृष्ठ भाग में स्पीति घाटी का 'की' मठ प्रदर्शित किया गया है। यह मठ तिब्बती बौद्ध धर्म के "गोलुग्पा' पंथ से जुड़ा है तथा यह चौदहवीं शताब्दी में, मध्य तिब्बत से पश्चिमी तिब्बत तक फली–फूली मठीय वास्तुकला का अनोखा उदाहरण है। इस झांकी में स्थान विशेष की स्तब्ध–शांति की एक झलक दिखाई गई है।

हिमाचल प्रदेश

Buddhist Monasteries

Situated in the picturesque western Himalayan ranges, Himachal Pradesh is also known as 'Dev Bhommi', 'Veer Bhoomi' and 'Apple Bowl' of India.

The tableau of Himachal Pradesh depicts 'Dhankar' and 'Kee' monasteries situated in Spiti Valley of great Himalayas which remains under the snow for months together. Dhankar once the capital of Spiti kingdom under the 'Nonos' was built at an altitude of 3870 metres above the sea level, the monastery defies the logic for its precarious and precipitous location on a spine of ice-bitten alluvium bluff over the left bank of river spiti. 'Dhankar' monastery known as 'Castle in the air' is shown on the tractor portion of the tableau. Once atop the roof of the highest chamber, one has an instinctive feeling of being in another world. The atmosphere of unconscious worship that pervades the valley, is strongest here. On the trailer, 'Kee' monastery of Spiti Valley is shown. This monastery belongs to 'Gelugpa' sects of Tibetan Buddhism and is the striking example of the monastic architecture proliferated in western Tibet during 14th century from central Tibet. The tableau gives a glimpse of the serenity of the place.

Himachal Pradesh

14

कलामण्डलम्

केरल की शास्त्रीय कला की भव्य परंपरा 19वीं शताब्दी के अंत में लुप्त होने के कगार पर थी। कला प्रदर्शन के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लब्ध प्रतिष्ठित केंद्र–केरल कलामण्डलम् की स्थापना 1930 में की गई थी, जो शास्त्रीय कला प्रदर्शन के क्षेत्र में, प्रशिक्षण की शुरुआत करने वाले केरल के सांस्कृतिक इतिहास में प्रथम संस्थागत कदम था ताकि इस कला को लुप्त होने से बचाकर पुनःर्जीवित किया जा सके। इस महत्वपूर्ण कला अकादमी की स्थापना स्वर्गीय कविवर वल्लाथोल नारायण मेनन तथा उनके साथी मनाक्कुलम मुकुंद राजा द्वारा त्रिशूर जिले के चेरूथरूटी में की गई थी। यह भारत में प्रशिक्षण प्रदान करने तथा कत्थकली, कूडियाट्टम्, मोहिनीअट्टम्, पंचवाद्यम् तथा थुल्लाल के प्रदर्शन का आयोजन करने वाली एक बेहतरीन संस्था है। इस स्कूल में शिक्षा की प्राचीन गुरूकुल प्रणाली एक सजीव परंपरा बनी हुई है।

केरल की इस झांकी के अग्रभाग में थुल्लाल, मोहिनीअट्टम् तथा कूडियाट्टम् कलाओं का प्रदर्शन तथा पृष्ठ–भाग में कलामण्डलम् का कूथमबलम् (कला मंचन मंच) जिसके साथ 'मिझावु' (एक परंपरागत ढोलक) तथा पंचवाद्यम् (पांच संगीत वाद्य यंत्रों का संयोजन) का चित्रण किया गया है। नांगियार कूथु, थुल्लाल तथा मोहिनीअट्टम् की प्रतिमाओं का एक ओजस्वी संयोजन ट्रेलर पर दिखाया गया है।

केरल

Kalamandalam

The spectacular tradition of classical arts of Kerala was on the verge of extinction, towards the close of 19th century. The Kerala Kalamandalam, a distinguished centre of excellence in Performing Arts, established in 1930 was the first institutional step in the cultural history of Kerala to start training in classical performing arts, so as to revive it from extinction. This important academy of arts was founded by the late poet **Vallathol Narayana Menon** and his associate **Manakkulam Mukunda Raja** at Cheruthuruty in Thrichur District. It has been invariably the best institution in India imparting training and conducting performance of Kathakali, Koodiyattam, Mohiniyattam, Panchavadyam and Thullal. The ancient Gurukula system of education continues to be a living tradition in this school.

The tableau of Kerala depicts the Koothambalam (The performance stage) of Kalamandalam with 'Mizhavu' (A traditional Drum) and Panchavadyam (A combination of five musical instruments) in the background, and performances of Thullal, Mohiniyattam and Kudiyattam in the front. A dynamic combination of Sculptures of Nangiar Koothu, Thullal and Mohiniyattam is shown on the trailer.

Kerala

15

सरहुल पर्व

सरहुल झारखण्ड के जनजातीय लोगों, विशेषकर मुंडा, ओरांव, खारिया, संथाल तथा हो, का एक महत्वपूर्ण पर्व है। सरहुल दो शब्दों – 'सर' अर्थात् साल वृक्ष तथा 'हुल' अर्थात् पूजा के संयोग से बना है। सर का शाब्दिक अर्थ है साल वृक्ष तथा हुल का अर्थ है पूजा। वास्तव में यह पर्व साल वृक्ष की पूजा के रूप में मनाया जाता है। जनजातीय समुदाय में साल वृक्ष का एक विशेष महत्व है। इस वृक्ष की जड़ एवं नए पत्तों में औषधीय गुण पाए जाते हैं। साल वृक्ष की लकड़ी का सदुपयोग फर्नीचर बनाने तथा घरों के निर्माण में किया जाता है। सरहुल पर्व ऋतु परिवर्तन के अवसर पर मनाया जाता है। इस अवसर पर लोग एक–दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं तथा प्रकृति की उदारता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। जनजातीय लोग पर्याप्त वर्षा तथा प्रचुर फसल के लिए देवताओं से प्रार्थना करते हैं। परंपरा के अनुसार सरहुल पर्व के सभी धार्मिक अनुष्ठान पूरे होने तक जनजातीय लोग साल वृक्ष के किसी अंश का उपयोग नहीं करते हैं। पूजा के सम्पन्न होने से पहले जनजातीय महिलाएं साल अथवा सखुआ के फूलों का प्रयोग गहने बनाने के लिए नहीं कर सकती हैं।

प्रस्तुत झांकी के अग्रभाग में एक व्यक्ति द्वारा बड़े जनजातीय नगाड़े को बजाते दिखाया गया है जो झारखण्ड की संस्कृति का प्रतीक है। झांकी के पृष्ठ–भाग में जनजातीय लोगों को साल वृक्ष के नीचे पूजा करते हुए दिखाया गया है तथा ये लोग परम्परागत वाद्य–यंत्रों की धुन पर नाच रहे हैं।

झारखण्ड

Serhul Festival

'Serhul' is an important festival of the tribal people of Jharkhand, particularly - Munda, Oraon, Kharia, Santhal and Ho. The term Serhul comprises two words – 'Ser' – that means Sal tree and 'Hul' i.e. worship. This festival, in fact, is the worship of Sal tree. Tribal communities attach special significance to the Sal tree, which has the therapeutic value in its roots and leaves. Sal logs are used in making furniture and constructing houses. Serhul is celebrated at the time of changing season, when people wish each other and express gratitude to the bountiful nature. The tribal people pray their deities for ample rains and rich harvest. As a matter of stricture, the tribal people do not use any part of the Sal tree till all the rituals of Serhul festival are completed. Even the tribal women do not use Sal or Sakhua flowers as natural ornaments before the worship is over.

On the front part of the tableau, a man is shown beating the traditional tribal Nagara, which represents the culture of Jharkhand. On the rear part of the tableau, tribals are seen worshipping under the tree of Sal and dancing to the tunes of traditional musical instruments.

Jharkhand

16

जम्मू-कश्मीर के धार्मिक स्थल/मंदिर

जम्मू–कश्मीर अपनी मिली–जुली संस्कृति तथा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। जम्मू–कश्मीर तथा लद्दाख के विभिन्न स्थानों पर स्थित ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों के अस्तित्व को उजागर करते हुए इस झांकी में विभिन्न धर्मों के लोगों के सह–अस्तित्व को दर्शाया गया है।

झांकी के अग्रभाग पर प्रस्तुत लकड़ी के ढांचे का एक भव्य पगोड़ा – चरारे शरीफ, कश्मीर के लोगों की आस्था का महान प्रतीक है। कश्मीर के ऋषि पंथ का ब्रह्मचर्य, संयम तथा तप पर जोर रहता है। इन ऋषियों में से एक महान ऋषि शेख नूरूद्दीन, कश्मीरियों के संरक्षक संत, नंद ऋषि के रूप में जाने जाते हैं। चरारे शरीफ में उनकी जियारत (धर्म स्थल) एक अत्यधिक पवित्र स्थल है। लद्दाख का हेमिस मठ झांकी के मध्य भाग में दिखलाया गया है। लद्दाख के अनेक सामाजिक तथा सांस्कृतिक पर्वों के दौरान बौद्ध मठों में मनाए जाने वाले इस वार्षिक त्यौहार में इस क्षेत्र की जीवन्त विरासत का अत्यधिक महत्वपूर्ण भाग रचा–बसा है। झांकी के पृष्ठ भाग में बावे वाली माता का प्राचीन मंदिर दिखाया गया है, जिसमें देवी की पूजा–अर्चना करने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ लगी है। अपनी उदात्त परम्परा को आगे बढ़ाते हुए, कश्मीरी लोग आज भी इन मंदिरों में पूजा करने आते हैं। राज्य में एकता की भावना बरकरार है।

जम्मू–कश्मीर

Shrines/Temples of Jammu and Kashmir

Jammu and Kashmir known for its composite culture and rich cultural heritage, through its tableau presents co-existence of the people of different faith by focussing on the existence of historic shrines situated at the various places of Jammu, Kashmir and Ladakh.

Charar-e-Sharief, a unique pagoda of wooden structure depicted on the tractor, is a great symbol of faith for the people of Kashmir. The rishi cult of Kashmir emphasised celibacy, austerity and penance. The greatest of these rishis Sheikh Nooruddin, the patron saint of Kashmiris, is also known as Nundrishi. His Ziarat (shrine) at Charar-e-Sharief is a highly venerated place. Hemis monastery of Ladakh is shown on the middle of the tableau. Among many social and cultural events of ladakh, the annual festival held in the Buddhist monasteries, constitutes the most important part of the region's living heritage. On the rear portion of the tableau an ancient temple of Bavey Wali Mata is shown, where pilgrims throng and jostle one another to worship the goddess. In continuation of their noble tradition, Kashmiri people come to these shrines to pray even today. The spirit of unity lives on.

Jammu and Kashmir

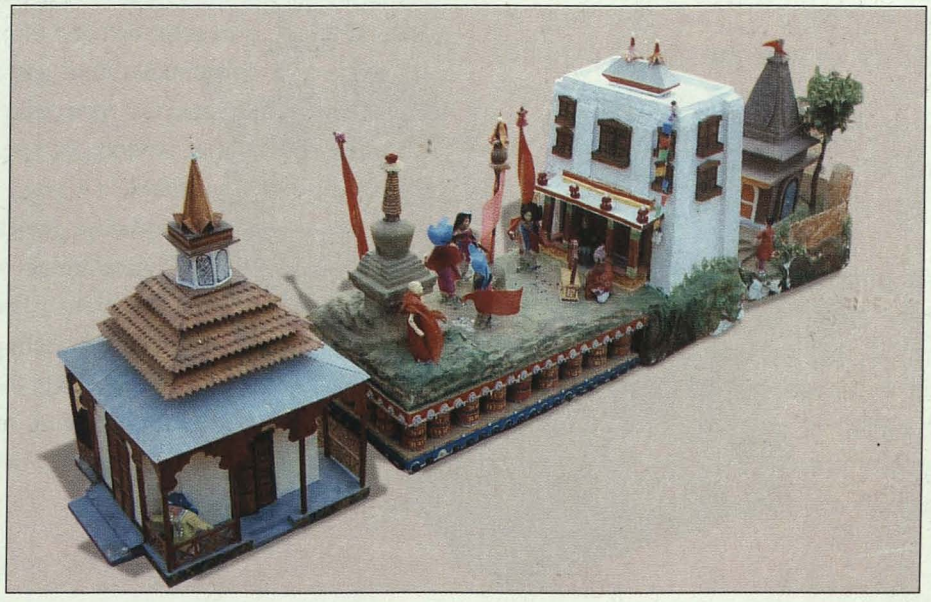

चेरापूंजी का संतरा शहद

'बादलों का घर' मेघालय की समानता, स्थलाकृतियों, सुरम्य सौंदर्य तथा वनस्पति के कारण, आमतौर पर स्कॉटलैंड से की जाती है। मेघालय, सोहरा (चेरापूंजी) संतरा शहद के लिए भी प्रसिद्ध है। चेरापूंजी जो कभी पृथ्वी पर सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान रहा है, पूर्वोत्तर भारत में सैलानियों के आकर्षण का सबसे बड़ा केंद्र है। अपनी अवस्थिति, जलवायु तथा वनस्पतियों की विविधता एवं प्रचुरता के कारण सोहरा मधुमक्खी पालन हेतु अत्यधिक अनुकूल और फलदायी स्थान है। *एपिस मिल्टीफोरा* तथा *एपिस इंडिका* सामान्य किस्म की मधुमक्खियां हैं, जिन्हें पाला जाता है। प्राकृतिक शहद की वर्ष भर मांग बनी रहती है। उपभोग्य पदार्थ के रूप में तथा परम्परागत और आयुर्वेदिक दवाइयों के एक महत्वपूर्ण संघटक के रूप में इसके उपयोग के कारण इस उत्पाद की अत्यधिक मांग है। परिणामस्वरूप मधुमक्खी पालन एक लाभदायक कारोबार के रूप में उभर रहा है।

मेघालय की झांकी में चेरापूंजी के संतरा शहद के फलते–फूलते कुटीर उद्योग का चित्रण किया गया है। झांकी के अग्रभाग में पेड़ पर एक मधुमक्खी का छत्ता चित्रित किया गया है जिसके नीचे रखे शहद के बर्तन में शहद गिर रहा है। झांकी के पृष्ठ भाग पर कोहराम्हा जल प्रपात को चित्रित किया गया है। पार्श्व पैनलों में मधुमक्खी पालन संबंधी कार्यों को दर्शाया गया है।

मेघालय

Cherrapunjee Orange Honey

Meghalaya 'the abode of clouds' is often likened to Scotland for its topography, scenic beauty and vegetation. Meghalaya is also famous for its Sohra (Cherrapunjee) orange honey. Cherapunjee, once the wettest place on earth, is the most visited tourist centre of north-eastern India. Its location, climate and the abundance of a wide spectrum of flora, makes it highly conducive for bee-keeping. *Apis miltifora* and *Apis indica* are the common types of bees utilised for rearing. Natural honey is in great demand throughout the year. Its usage as a consumable item and as an important ingredient in traditional and ayurvedic medicines make it a much sought after product. As a result bee-keeping is growing into a profitable activity.

The tableau of Meghalaya depicts the flourishing cottage industry of Cherrapunjee orange honey is Meghalaya. The tractor depicts a bee-hive on a tree from where a drop of honey is falling into the honey collection jar kept underneath. On the trailer, the Koh Ramha waterfall is portrayed in an imposing slope at the rear of the trailer. Side panels depict relief of the bee-keeping activities.

Meghalaya

कांग्ला पर्व

पाखांग्वा सेंग होंग्बा पर्व मई माह के दौरान मणिपुर कैलेंडर के कलेन की पूर्णिमा को कांग्ला (मणिपुर का प्राचीन महल) में मनाया जाता है। राज्य के विभिन्न पर्वतीय तथा मैदानी भागों के सभी समुदायों के लोग इस त्यौहार में भाग लेते हैं। प्रतिवर्ष यह त्यौहार लोगों की शांति तथा समृद्धि के लिए मनाया जाता है। धार्मिक अनुष्ठान संबंधी यह समारोह मायबी तथा मायबा (स्त्री और पुरुष पुरोहित) द्वारा धरती के लोगों के कल्याण और समृद्धि हेतु सर्वोच्च देवता और देवी को चावल और फूल अर्पित करके प्रसन्न किया जाता है। सभी सहभागी पारम्परिक पोशाकों में एकत्रित होते हैं तथा कांग्ला में देवी–देवताओं के समक्ष परम्परागत नृत्य करते और आनन्दित होते हैं।

मणिपुर की झांकी में कांग्ला पर्व की प्रस्तुति है। ट्रैक्टर पर दो 'कांग्ला शा' की प्रतिमाएं जो कि पौराणिक जानवर (वर्तमान में राज्य का प्रतीक चिन्ह) हैं, दिखाए गए हैं। ट्रेलर पर कांग्ला उत्तरा सांग को दर्शाया गया है। झांकी के मुख्य ट्रेलर के चारों किनारों पर खड़े चार सत्र सर्वशक्तिमान प्रभु की महत्ता को दर्शाते हैं।

मणिपुर

Kangla Festival

Pakhangba Cheng Hongba Festival is performed on the full moon of Kalen of Manipuri calendar during the month of May at Kangla (the old palace of Manipur). All the communities from the hills and plains of different parts of the State participate in this festival. The festival is performed every year for the peace and prosperity of the people and the land. The ritual ceremony is performed by the *Maibi* and *Maiba* (female and male priest) offering rice and flowers to the supreme God and Goddess. All the participants gather together in customary dresses with traditional dancing and joy in front of the God and Goddess at Kangla.

The tableau of Manipur presents the Kangla festival. On the tractor, statue of two "Kangla Sha" the mythological beast (now the State Emblem), are shown. The trailer shows the Kangla Uttra Shang. The four Satras erected on the four corners of the main trailer shows the dignity of the Supreme God.

Manipur

तेल उद्योग का विकास

पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस भण्डारों से सम्पन्न असम भारत का अग्रणी तेल उत्पादक राज्य है। यह वही स्थान है, जहां पर भारत में पहली बार तेल मिला था, वर्तमान् में यह औद्योगिक विकास के एक नए युग में प्रवेश कर रहा है। यह एक ऐसा अवसर भी था जिसने विश्व अर्थव्यवस्था के साथ भारत के एकीकरण की छाप छोड़ी। 21वीं शताब्दी में, यह राज्य देश के विश्वसनीय ऊर्जा स्रोतों वाले राज्यों में से एक बना हुआ है। यह विरासत उतनी ही बिरली और महत्वपूर्ण है जितनी कि राज्य की अद्‌भुत तथा आश्चर्यजनक रूप से समृद्ध तथा विविध सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक परम्पराएं हैं।

असम की झांकी में असम के तेल उद्योग के विकास, को चित्रित किया गया है। झांकी के अग्रभाग में तेल से सने पैरों वाले हाथी को आगे बढ़ते हुए तथा तेल से सने पैरों वाले एक स्थानीय व्यक्ति को एक अंग्रेज अन्वेषक के समक्ष अपने पैर दिखाते हुए दर्शाया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में, प्रथम 'डेरिक' अथवा 'तेल कुंए' का दृश्य दिखाया गया है। यहां पर पहली बार तेल मिला था। साथ में कामगार तथा पर्यवेक्षक कार्यरत दिखाए गए हैं। इसके बाद एक आधुनिक तेल शोधशाला तथा पाइपलाइन है जिसमें पाइपों के माध्यम से तेल के बहाव और कामगार तेल शोधशाला से सम्बद्ध विभिन्न क्रिया–कलापों में व्यस्त हैं, को दर्शाया गया है।

Evolution of Oil Industry

Assam is India's foremost oil-bearing State, rich in both petroleum deposits and natural gas. This is the place where oil was struck for the first time in India, ushering in a new age of industrial development. It was also an event that marked India's integration with the world economy. In the 21st century, the State remains one of the most reliable energy resources in the country. It is a heritage as rare and important as the State's unique and wonderfully rich and diversified cultural and historical traditions.

The tableau of Assam depicts the evolution of oil industry in Assam. On the tractor, an elephant with oil-stained feet, moving ahead and a local man showing the oil-stained feet to the British explorer are shown. On the trailer, the scene of the first 'Derick' or 'oil well' where oil was first struck is shown along with workers and supervisors followed by a modern refinery and pipeline with workers busy in various refinery related activities.

असम ***Assam***

तानसेन समारोह

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के इतिहास में ग्वालियर का विशिष्ट स्थान है। यह तानसेन समारोह अथवा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के त्यौहार के लिए भी जाना जाता है। इसे प्रतिवर्ष तानसेन की समाधि (कब्र) पर मनाया जाता है। समग्र भारत से संगीत आचार्य, अकबर के दरबार के नौ रत्नों में से एक, विख्यात गायक तानसेन को श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुंचते हैं। तानसेन की समाधि को, शास्त्रीय संगीत के सभी मुरीद तथा इस प्रतिष्ठित पर्व के दौरान श्रद्धांजलि अर्पण करने को सौभाग्य मानने वाले कलाकार, श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

मध्य प्रदेश की झांकी में तानसेन समारोह के संगीत के जादू को बड़ी सशक्तता से जीवंत करने का प्रयास किया गया है। झांकी के अग्रभाग में, महान संगीतज्ञ तानसेन को, शिव मंदिर के सामने संगीत का अभ्यास करते हुए दिखाया गया है। इसके निकट ही एक इमली का पेड़ है। ऐसा कहा जाता है कि इमली के पेड़ के पत्ते खाने से गला साफ हो जाता है। झांकी के ट्रेलर पर, तानसेन की समाधि दिखाई गई है जहां हिंदू और मुसलमान श्रद्धा से नमन करते हैं। झांकी के पृष्ठ भाग में, ट्रेलर पर, राजा मान सिंह तोमर का 'मान मंदिर' प्रदर्शित है। राजा मान सिंह तोमर संगीत के संरक्षक थे और जब तक 'ध्रुपद' (शास्त्रीय संगीत विधा) रहेगा, उनके नाम को भुलाया नहीं जा सकता।

मध्य प्रदेश

Tansen Samaroh

Gwalior has a distinguished place in the history of Hindustani classical music. It is also known for the unique Tansen Samaroh or the festival of Hindustani classical music organised every year at the samadhi (grave) of Tansen. Maestros from all over the country come to offer their tributes to the legendary singer Tansen, one of the nine jewels of Akbar's court. Tansen's Samadhi is revered by all those who love classical music and the artists consider it their privilege to offer their tributes during this prestigious event.

The tableau of Madhya Pradesh attempts to recapture the magic of Tansen Samaroh. On the tractor, the great musician Tansen is seen practising the music in front of a Shiva Mandir (temple). There is a tamarind tree near it. It is believed that eating the leaves of the tamarind tree clears the throat. On the trailer, Tansen's samadhi is shown where Hindus and Muslims are bowing their heads in obeisance. The rear portion of the trailer shows Raja Mansingh Tomar's 'Man Mandir'. Raja Mansingh Tomar was the great patron of the music and as long as the 'Dhrupad' (form of classical music) survives, his name will not be forgotten.

Madhya Pradesh

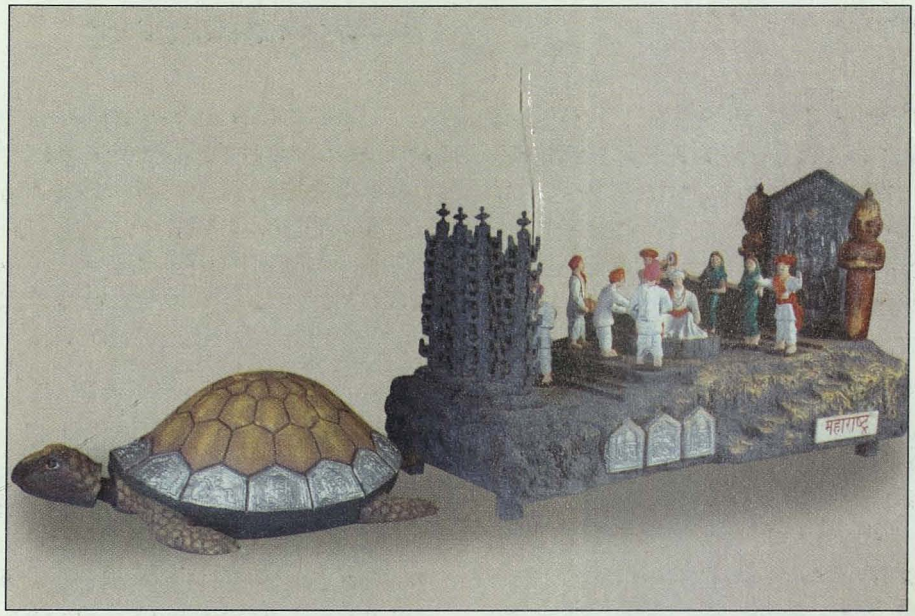

जेजुरी का खण्डेराया

अपनी झांकी के माध्यम से महाराष्ट्र राज्य, जेजुरी का खण्डेराया (जेजुरी का खण्डोवा मंदिर) के रूप में विख्यात पहाड़ी मंदिर की परम्परागत वास्तु शिल्प, उकेरी गई चित्रकारी तथा चित्रकला को दिखाया गया है।

झांकी के अग्रभाग में, पीतल की एक विशाल प्रतिकृति, पहाड़ी मंदिर के प्रवेश द्वार पर कछुए की 25 फुट व्यास की दिखाई गई है। यह स्थान 'रंगशीला' कहलाता है, जो कि धार्मिक अनुष्ठान के भाग के रूप में एक नृत्य प्रदर्शन स्थल है। यह हरि–हर ऐक्य (शिव तथा विष्णु का संगम) का एक उत्तम उदाहरण भी है। यह कछुआ शिव के अवतार 'कुर्मावतार' तथा 'खण्डोबा अवतार' का प्रतीक है। सामान्यतः, कछुए की एक लघु प्रतिकृति महाराष्ट्र के कुछेक महत्वपूर्ण मंदिरों में पाई जाती है। ट्रेलर पर दीपमालाएं (दीप रखने के लिए एक सुसज्जित शिला स्तम्भ) दिखाई गई हैं जो महाराष्ट्र मंदिर परिसर का एक अद्भुत पहलू है। आमतौर पर, मंदिरों में केवल एक दीपमाला होती है परंतु जेजुरी में दीपमाला के एक साथ चार बड़े मीनार खड़े दिखाए देते हैं। झांकी के पृष्ठ भाग में ट्रेलर पर संगीत के साथ एक रंगारंग लयबद्ध तथा जोरदार नृत्य देखा जा सकता है।

महाराष्ट्र

Jejuri Ka Khanderaya

The State of Maharashtra through their tableau is showcasing the traditional architecture, performing arts and artwork at the hill temple complex known as Jejuri Ka Khanderaya (Jejuri ka Khandova temple).

On the tractor, a huge replica of the turtle in brass located at the entrance of the hill temple is shown. The place called '*Rangsheela*', is the venue for dance performances as a part of rituals. It is also a fine example of Hari-Har Aikya (Unison of Shaiv and Vaishnav). The turtle denotes '*Kurmavatar*' and '*Khandoba*' the avatars of Shiva. Usually, a small replica of turtle is found in some of the important temples in Maharashtra. On the trailer, 'deepmalas' (a decorative stone tower for placing lamps) is shown, which is a unique feature of the temple complex. Usually, there is only one deepmala in the temples but at Jejuri four big towers of deepmala are seen standing together. In the rear portion of the tableau a colourful, rhythmic and robust dance with music is shown.

Maharastra

22

होज़ागिरि नृत्य

त्रिपुरा की झांकी में, त्रिपुरा के पुरातन जनजातीय नृत्य–'होज़ागिरि' के लय संतुलन की एक अद्भुत अभिव्यक्ति, की झलक दिखाई गई है। अन्य जनजातीय समुदायों की तरह त्रिपुरा के 'रींग्स' नृत्य और गायन के शौकीन हैं। वे आमतौर पर समाजिक या धार्मिक समारोह में सामूहिक नृत्य करते हैं। नृत्य के लिए कोई विशेष पोशाक और गहने नहीं होते। वे मिट्टी के घड़े पर खड़े होकर, अपने सिर पर एक बोतल रखकर तथा इसके ऊपर तेल का एक दीप जलाकर नृत्य करते हैं। कुछ अपनी कोहनियों पर बोतल रखकर समूह में नृत्य करते हैं। कभी–कभी वे बाएं हाथ की तर्जनी पर डाटा रखकर इसे दाएं हाथ पर घुमाते हुए नृत्य करते हैं। काया की थिरकन में इनकी शानदार महारत होती है जो कि काया के ऊपरी भाग में धीमी सी हरकत के बिना ही पूर्णतः कमर तथा नाभि पर आधारित होती है, ऐसे में दोनों पैर एक दूसरे के निकट ही रखे जाते हैं। काया की इस लरजती थिरकन का यह घुमाव विदेशी 'ट्विस्ट' नृत्य से मिलता–जुलता है। होज़ागिरि नृत्य राजस्थान के किसी लोक–नृत्य से भी मिलता–जुलता है। यहां तक कि इसकी शास्त्रीय कथक नृत्य और कुचिपुड़ी नृत्य से भी कुछ समानता है। होज़ागिरि नृत्य का साथ खाम (ढोलक) तथा सुरनुई (बांसुरी) और गीत से दिया जाता है जिसकी पुरातन निरंकुश धुन होती है परंतु लय अद्भुत झूमदार होती है।

त्रिपुरा

Hozagiri Dance

The tableau of Tripura gives a glimpse of the primitive tribal dance of Tripura, 'Hozagiri' – a wonderful expression of balance in rhythm. The 'Reangs' of Tripura are fond of dancing and singing like other tribal communities. They dance in a group usually in some social or religious ceremonies. They have no special dress and ornaments for dance. Standing on an earthen pitcher they dance with a bottle on the head and a lighted oil-lamp above it. Some groups dance with bottles on their elbows, sometimes with a data on the forefinger of the left hand rotating it by the right hand. There is marvellous expertise in the movement of the body which is solely based on the waist and the navel without the slightest movements in the upper part and by keeping the two feet closed. This twisting movement of the body resembles with the foreign twist dance. This Hozagiri dance has resemblances with some folk dance of Rajasthan and even to the classical Kathak dance and Kuchipudi dance. The Hozagiri dance is accompanied by Kham (Drum) and Surnui (flute) as well as song which has a primitive wild tune but wonderful swinging rhythm.

Tripura

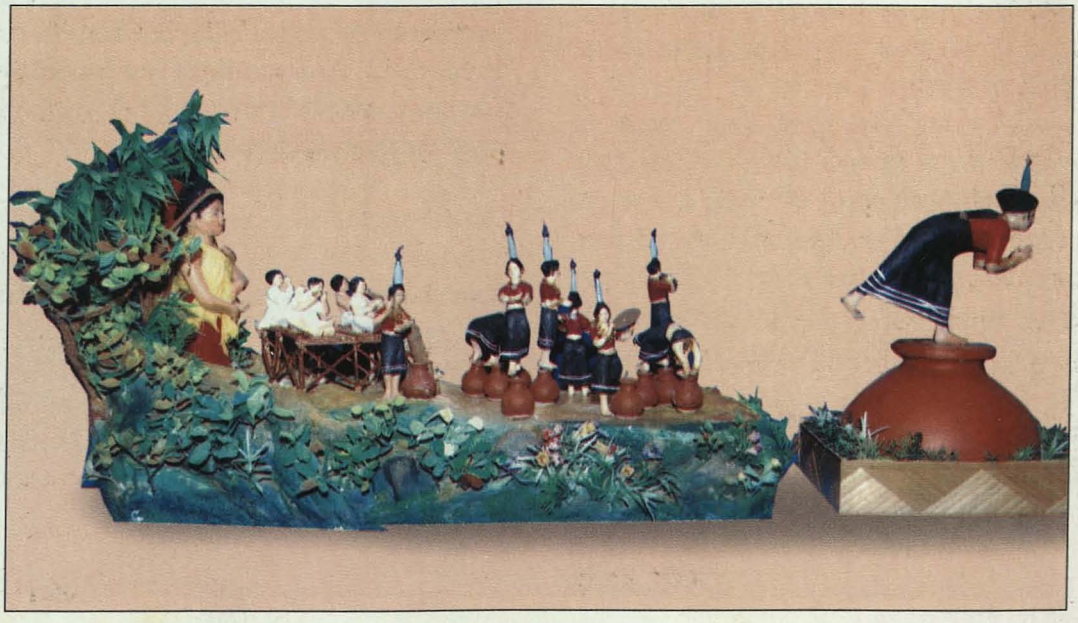

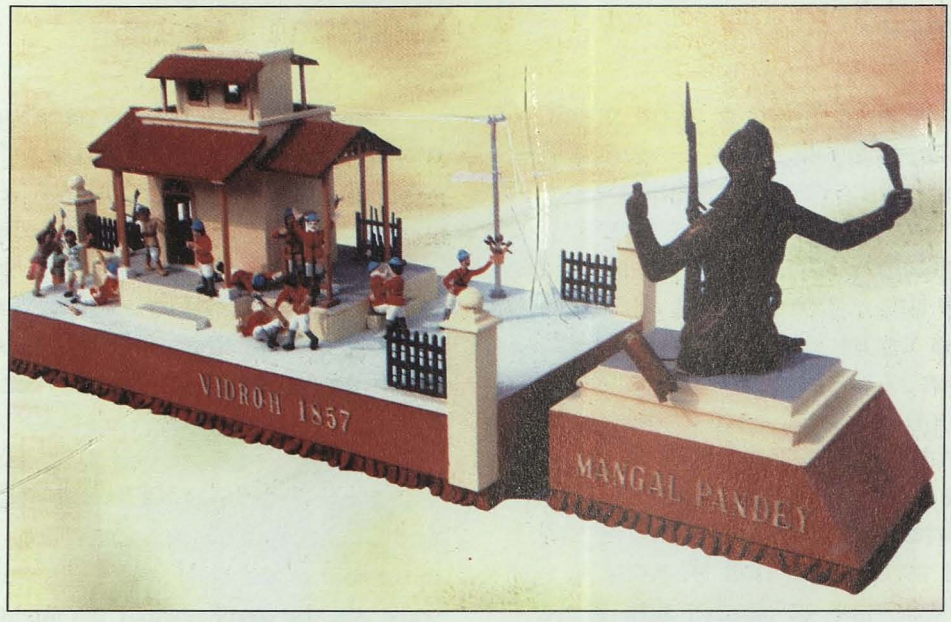

23

1857 के विद्रोह का आरंभ

1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में मील का एक पत्थर है। शुरुआत में विद्रोह 31 मई से किए जाने की योजना थी, किंतु 31 मई के बजाय, मेरठ छावनी के सिपाहियों ने कारतूसों में पशुओं की चर्बी के इस्तेमाल किए जाने से उत्तेजित होकर ब्रिटिशों के खिलाफ 10 मई 1857 को विद्रोह करके प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का शुभारंभ कर दिया। सभी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं किन्तु अति उत्साही सिपाही मंगल पांडे ने 21 मार्च को बैरकपुर छावनी में परेड के दौरान उन कारतूसों से फायर करने से इंकार कर दिया जिसमें पशुओं की चर्बी का इस्तेमाल किया गया था। इसके परिणामस्वरूप 8 अप्रैल को उन्हें फांसी दे दी गई। अज़ीम उल्लाह खान द्वारा बनाई योजना के अनुसार पूरे भारत में एक ही साथ विद्रोह का प्रारंभ किया जाना था। किन्तु ऐसा नहीं हो सका। यदि विद्रोह योजनानुसार आरंभ हुआ होता तो आसानी से विद्रोह का दमन नहीं किया जा सकता था। सिपाहियों के साथ क्रांतिकारियों ने अविलंब स्वतंत्रता संग्राम की अग्नि पूरे देश में प्रज्जवलित कर दी। मेरठ के दो हजार सिपाहियों के शौर्य की कहानी इतिहास में अतुलनीय है।

उत्तर प्रदेश की झांकी 1857 के इस विद्रोह की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम के शहीदों को उपयुक्त श्रद्धांजलि है।

उत्तर प्रदेश

Beginning of Vidroh of 1857

The Revolt (Vidroh) of 1857 is an important milestone in the history of Indian freedom struggle. Initially, the Vidroh was planned for May 31. Instead of May 31, the sepoys of Meerut cantonment, enraged over use of tallow in the cartridges started the first War of Independence by revolting against the Britishers on May 10, 1857. All the preparations were complete, but an over-zealous sepoy, named Mangal Pandey refused to fire with the cartridges in which tallow was used during the parade in the Barrackpore cantonment on March 21. As a result, he was hanged on April 8. The revolt, planned by Azim Ullah Khan, was to take place throughout India at one time. But it could not take place. If the revolt had taken place as planned, it could not have been easily quelled. The revolutionaries, along with the sepoys, spread the fire of War of Independence throughout the country within no time. The story of the bravery of two thousand sepoys of Meerut is unparalleled in history.

The presentation through the tableau of Uttar Pradesh is a befitting tribute to the martyrs of the first War of Independence on the occasion of 150 years of the Vidroh.

Uttar Pradesh

24

कोंढेई शिल्प

उड़ीसा अपने पारम्परिक आकार–प्रकार के लकड़ी के खिलौनों के लिए प्रख्यात है। ये खिलौने, चिड़ियों और जानवरों, देवी–देवताओं और मानवीय आकारों में बनाए जाते हैं। ये सभी खिलौने बड़ी दक्षता से गढ़े जाते हैं और लोक शैली में चमकीले रंगों से बनाए जाते हैं। गमहारी नामक स्थानीय लकड़ी का इस्तेमाल गढ़ाई के लिए इसलिए किया जाता है कि इसकी सतह अच्छी होती है और यह हल्के क्रीम रंग की होती है। सामान्यतः लकड़ी के मुखौटे हल्की चमकीली लकड़ी से बनाए जाते हैं और चमकीले रंग इनमें भरे जाते हैं। राज्य के हजारों हस्त–शिल्पी इन जटिल और आकर्षक खिलौनों और मुखौटों के उत्पादन में लगे हुए हैं।

उड़ीसा की झांकी में खिलौनों, मुखौटों आदि के माध्यम से पारम्परिक कलाकारी का प्रदर्शन किया गया है। ट्रैक्टर पर 'नबगुंजर', ईश्वर का एक अवतार, के विशाल खिलौने को प्रदर्शित किया गया है। ट्रेलर में कलाकारों द्वारा खिलौने बनाए जाने और उन्हें बेचे जाने का दृश्य दिखाया गया है। ट्रेलर के बीच में, दशानन रावण को स्थित मुद्रा में रखा गया है। ट्रेलर के अंत में, पुरी के भगवान जगन्नाथजी के मन्दिर का प्रतिरूप पारम्परिक रंगों में प्रदर्शित किया गया है।

Kondhei Craft

Orissa is well known for its traditional stylised wooden toys. These toys depict birds and animals, images of Gods and Goddesses and human figures. All these toys are carved with great skill and made in folk style with bright colours. Gamhari – the local wood used for the carvings has a fine texture and is of light-cream colour. The wooden masks are usually made of light bright wood and painted with bright colours. Thousands of craftsmen in the state are engaged in production of this intricate and attractive toys and masks.

The tableau of Orissa depicts the traditional artistic manifestations through the medium of toys, masks etc. On the tractor, a massive toy of "Nabagunjara", an avatar of God is depicted. A scene of making the toys and marketing of the same by the artisans has been shown on the trailer. On the middle of the trailer, a toy of Ravana with ten heads has been fixed. At the rear of the trailer, a replica of Lord Jagannath Temple, Puri is shown with traditional colours.

उड़ीसा ***Orissa***

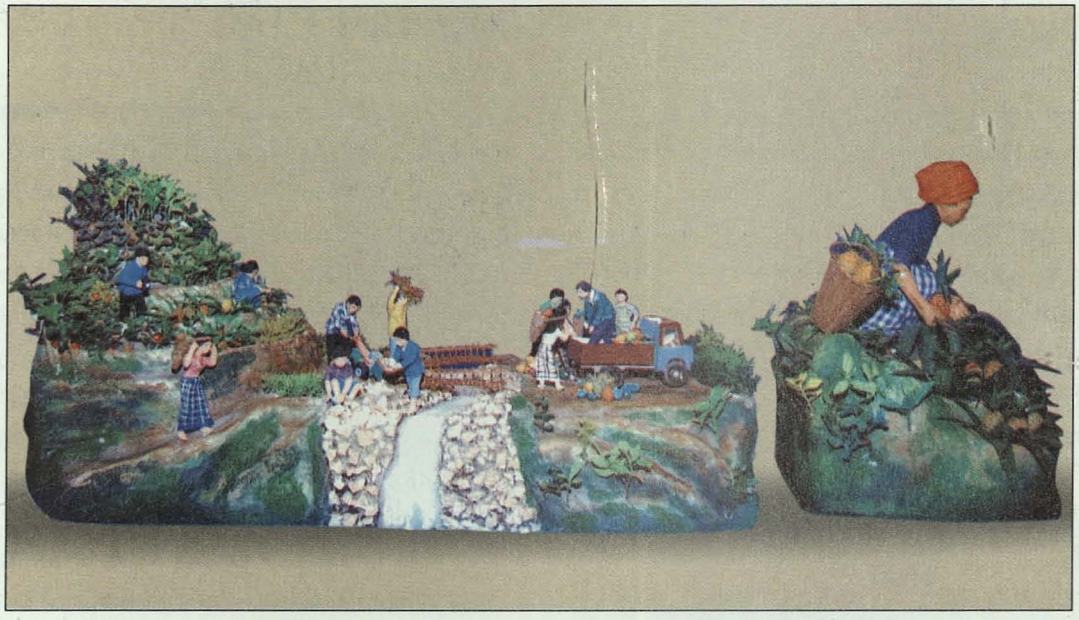

सीढ़ीदार खेती

सीधे पहाड़ी ढलानों, समोच्च पुश्तों, बेंच सीढ़ियों या दोनों उपायों के संयोजन ने कृषि योग्य भूमि में न्यूनतम अनुमत सीमा तक मिट्टी और पानी का नुकसान रोकने में सहायता की है। संचालनात्मक सुविधा के लिए इन उपायों का शीर्ष अंतराल 0.5 से 1.0 मीटर की सीमा तक रखा जाना जरूरी है। राई, मकई, कसावा, तिल आदि, जिनमें कम पानी की जरूरत होती है, ऊपर की सीढ़ी में उगाई जाती है और धान उगाने के लिए निचली सीढ़ियों का उपयोग किया जाता है ताकि अधिकतम उत्पादन लिया जा सके।

मिजोरम की झांकी में पारम्परिक सीढ़ीदार खेती दर्शायी गई है। खेती के 'झूम' नाम के विनाशकारी तरीके, जिसमें फसल को कटाई करके अवशेष को जला दिया जाता था, से खेती किए जाने का वैकल्पिक तरीका है। ट्रैक्टर पर एक मिज़ो महिला पहाड़ी सीढ़ीदार ढलान में उगाई गई पैदावार जमा करती दर्शायी गई है। ट्रेलर में सीढ़ीदार खेती के तीन दृश्य हैं जिनमें ढलान वाले पहाड़ी क्षेत्रों में किए जाने वाले वनरोपण, उद्यान और कृषि कार्यकलाप दर्शाए गए हैं।

मिज़ोरम

Terrace Cultivation

For agricultural land use on steep hill slopes, contour bunds, bench terraces or combination of both measures help in reducing soil and water losses. Vertical interval of these measures needs to be kept within the limit of 0.5 to 1.0 metre for operational convenience. Crops like ragi, maize, cassava, sesame etc., which require less water are raised in the upper terraces while lower terraces are used for growing rice in order to maximise production.

The tableau of Mizoram depicts the traditional terrace cultivation – this alternate system of agriculture replacing the destructive method of slash and burn process known as 'Jhum' cultivation. On the tractor, a Mizo woman is shown collecting the agriculture produce grown on the hilly terrace slope. The trailer shows a three tier terrace cultivation depicting afforestation, horticulture and agricultural activities done on hilly slope contour.

Mizoram

स्त्री शक्ति - महिला सशक्तिकरण

दिल्ली सरकार के 'स्त्री शक्ति' कार्यक्रम का उद्देश्य समाज के विशेष रूप से कमजोर वर्गों की महिलाओं को सशक्त बनाना है। आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि लिंग अनुपात में चिंताजनक रूप से कमी हुई है और महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में वृद्धि हुई है।

इस झांकी में राजधानी में विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की सफलता की कहानियां दर्शायी गई हैं, जिसमें उन्होंने स्वयं को समाज के विकास में सुयोग्य और सक्रिय साझेदार प्रमाणित किया है। झांकी में महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराधों, प्रसव–पूर्व निदान जांच, अल्प शिक्षा, निम्न स्तरीय पोषण और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की कमी, दहेज जैसी समस्याओं की वजह से महिलाओं के अस्तित्व के प्रति खतरे की ओर भी ध्यानाकर्षित किया गया है। ट्रैक्टर पर महिला की एक विशालकाय प्रतिमा स्त्री शक्ति आन्दोलन और संदेशों में दर्शायी गई महिला का प्रतीक है। महिला की अर्ध–प्रतिमा में विशेष रूप से महिला के चेहरे पर संतोष और शान्ति के भाव दर्शाए गए हैं। झांकी में शिक्षा, स्वास्थ्य, कला, संस्कृति, खेलों और जीवन के अन्य क्षेत्रों सहित नगर के विकास में दिल्ली की महिलाओं की भूमिका पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली

Stree Shakti - Empowering Women

'Stree Shakti', the programme of the Government of Delhi is aimed at the empowerment of women in the capital especially those belonging to the weaker sections of the society. The statistics show that there is an alarming decline in the sex ratio and a rise in crime against women.

The tableau portrays the success stories of the women in various areas of the capital where they have proved themselves worthy and active stakeholders in the development of the society. The tableau also reminds us of the threat to the very existence of women due to the rising crime against women, pre-natal diagnostic tests, poor education, low level of nutrition and health care facilities, dowry etc. On the tractor, a larger than life sculpture of a woman is a reminder of the woman visible in Stree Shakti campaigns and communications. The bust of the woman essentially shows the expression of contentment and calmness on the woman's face. The tableau highlights the role of Delhi women in the development of the city especially in the areas of education, health, art, culture, sports and other walks of life.

National Capital Territory of Delhi

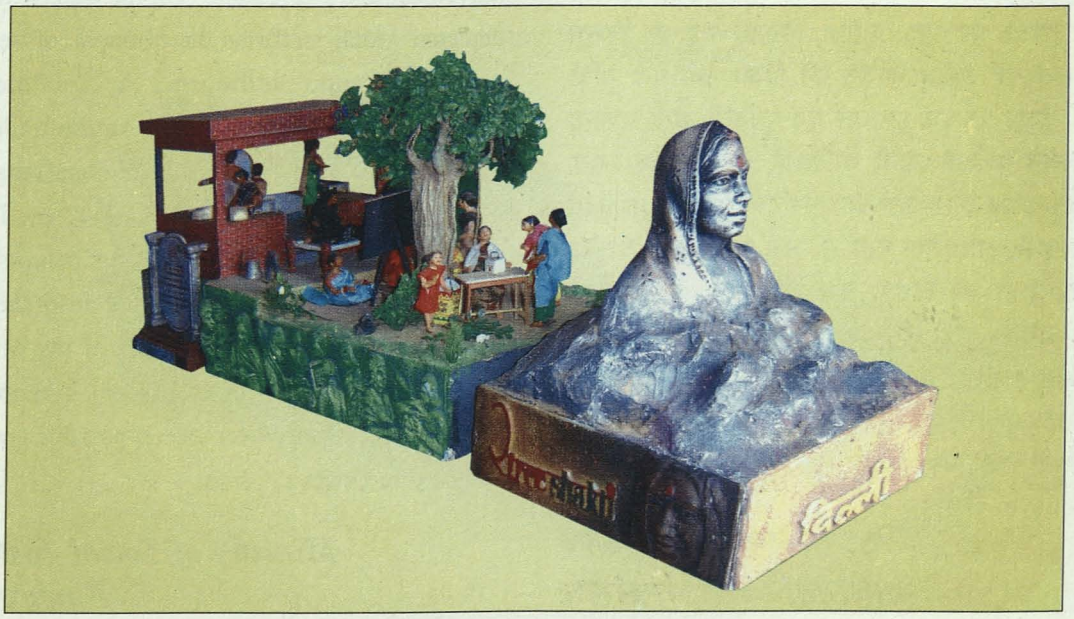

नशे को ना, जीवन को हाँ

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की झांकी की विषय–वस्तु है 'नशीले पदार्थों को ना और जीवन को हाँ कहें'।

झांकी में नशे की मांग में कमी के क्षेत्र में किए गए कार्यकलाप दर्शाए गए हैं, जिसमें मूकाभिनय थियेटर के जीवन्त और दृश्य रूपों का प्रयोग किया गया है। इसमें कुछ कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती क्योंकि इसमें भाव–भंगिमा, गतिविधि और भावों की भाषा इस्तेमाल की जाती है। ट्रैक्टर पर एक प्रतिमा दिखाई गई है जिसमें द्रव्यों की लत पर स्वस्थ जीवन की विजय की पुनः पुष्टि की गई है। ट्रेलर पर एक उपचार एवं पुनर्वास केन्द्र दर्शाया गया है जिसमें नशे के आदी व्यक्तियों को समझाए जाने, नशे से मुक्त कराए जाने और व्यावसायिक पुनर्वास के दृश्य हैं। पृष्ठ भाग में, लाक्षणिक रूप से 'नशे का दानव' दर्शाया गया है जो लोगों को निरंतर इस बुराई की ओर आकृष्ट करने का प्रयास कर रहा है। सामाजिक न्याय और अधिकारिकता मंत्रालय की झांकी में यह प्रतीकात्मक संदेश है कि नशे की गुलामी पर विजय पाना संभव है और नशीले पदार्थों को ना कहा जा सकता है।

सामाजिक न्याय और अधिकारिकता मंत्रालय

Say No to Drugs, Say Yes to Life

The theme of the tableau of the Ministry of Social Justice and Empowerment is 'Say No to Drugs, Say Yes to Life'.

The tableau highlights the activities in the area of drug demand reduction using the live and visual form of Pantomime theatre, which does not require the spoken word as it uses the language of gesture, movement and expression. On the tractor, a statue is depicted which reaffirms the triumphs of healthy life over substance addiction. A Treatment cum Rehabilitation Centre is shown on the trailer, where counselling, detoxification and vocational rehabilitation of the drug affected persons are carried out. In the rear portion, a metaphor of the "drug demon" who is constantly trying to lure people into the vice of addiction is shown. The tableau of the Ministry of Social Justice and Empowerment symbolises the message that victory over vice is possible and one can 'Say No to Drugs'.

Ministry of Social Justice and Empowerment

28

जनजातीय समुदाय तथा पर्यावरणीय संरक्षण

हमारे देश के जनजातीय समुदायों की जीवन–शैली सदैव हमें आकर्षित करती रही है। जनजातीय कार्य मंत्रालय की झांकी में जनजातियों की जीवन्त और रंगीन परम्परा तथा प्रकृति के साथ उनके सहचर्य संबंधों को प्रदर्शित किया गया है। इसमें यह दर्शाया गया है कि किस तरह से ये जनजातियां आत्मनिर्भरता और खुशहाली का जीवन व्यतीत कर रही हैं। जनजातीय लोग अपनी जीविका के लिए प्रकृति पर निर्भर हैं किंतु वे उसे किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। सहजीवी संबंध में यह तथ्य भी उजागर किया गया है कि ये सभी कार्यकलाप उस क्षेत्र के पारिस्थितिकीय तंत्र को बिना कोई नुकसान पहुंचाए, किए जाते हैं।

ट्रैक्टर खंड में एक युवा जनजातीय महिला का विशालकाय पुतला प्रदर्शित किया गया है। अपने पारम्परिक वस्त्रों और आभूषणों से सजी हुई इस महिला के चेहरे पर खुशी और सकारात्मक भाव दर्शाए गए हैं। ट्रेलर पर हमें एक ठेठ जनजातीय झोंपड़ी दिखाई देती है जिसे प्राकृतिक सामग्री से बनाया गया है। इसकी छत फूलों और अन्य प्राकृतिक चीजों से सजाई गई है। झोंपड़ी में चमकीले रंग लाए गए हैं जो इन जनजातीय लोगों के खुशहाल जीवन को प्रदर्शित करते हैं जिसके लिए ये प्रख्यात हैं। पृष्ठ भाग में अपनी आजीविका के लिए इन जनजातियों की प्रकृति पर निर्भरता प्रदर्शित की गई है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय

Tribal Communities and Environmental Conservation

The life style of the tribal communities of our country has always fascinated us. The tableau of the Ministry of Tribal Affairs demonstrates the vibrant and the colourful heritage of the tribals and their symbiotic relationship with nature. The presentation shows how these tribals are leading a life of self-reliance and happiness. The tribals are dependent on nature for their livelihood but without any damage to it. The symbiotic relationship also comes out with the fact that all these activities are accomplished without disturbing the ecological character of the regions.

The tractor section displays a larger than life sculpture of a young tribal woman. Dressed in her traditional attire and jewellery the woman shows a happy and positive expression on her face. On the trailer, we see a typical hut of a tribal that is made from all the natural elements. The roof is embellished with flowers and other natural things. The hut is coloured in vibrant shades showing the happy life these tribals are famous for. The rear section shows the dependence of the tribals on nature for their livelihood.

Ministry of Tribal Affairs

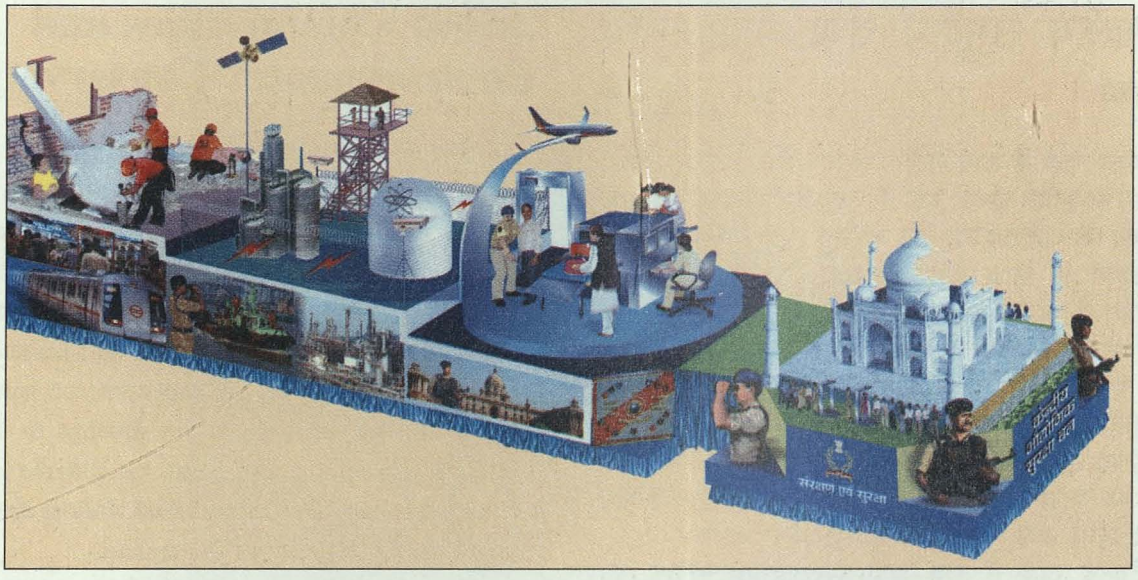

संरक्षण एवं सुरक्षा

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की झांकी का उद्देश्य सुरक्षा के उन विभिन्न पहलुओं को दिखाना है जिन्हें केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल राष्ट्र की सर्वाधिक संवेदनशील और महत्वपूर्ण संस्थापनाओं को सुरक्षा प्रदान करने में अपनाता है।

ट्रैक्टर पर ताजमहल का एक प्रतिरूप तथा केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल द्वारा किए जाने वाले 'क्यू' प्रबंधन को दिखाया गया है। विशिष्ट दृश्यमान अपील के साथ चार केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल कार्मिकों को चार भिन्न दिशाओं की ओर मुँह करके सतर्कता और प्रहरी गतिविधियों की छाप के साथ दिखाया गया है। ट्रैक्टर के दोनों तरफ, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल का आदर्श वाक्य – 'संरक्षण एवं सुरक्षा' दर्शनीय है। ट्रेलर पर केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल द्वारा निष्पादित किए जाने वाले विभिन्न सुरक्षा संबंधी कार्यकलापों अर्थात् हवाई अड्डों पर सुरक्षा सेवाएं, हस्तधारित मेटल डिटेक्टर से यात्रियों की तलाशी लिया जाना, एक्सरे सामान निरीक्षण प्रणाली के जरिए सामान की जांच करने आदि का चित्रण किया गया है। झांकी के पीछे अग्नि सुरक्षा तथा विकिरणरोधी सूट पहने कुछ कार्मिक हैं। बम का पता लगाने और उसे निष्प्रभावी करने के लिए श्वान दस्ता सहित निपटान दस्ता भी देखा जा सकता है।

गृह मंत्रालय (के.औ.सु.ब.)

Protection and Security

The tableau of the Central Industrial Security Force (C.I.S.F.) aims at showcasing the different aspects of the security coverage, the CISF has been providing to the nation's most sensitive and vital installations.

A replica of Taj Mahal and its "Q" management undertaken by the C.I.S.F. is shown on the tractor. The four CISF personnel are seen with a distinct visual appeal as all are facing four different directions giving an impression of alert and watchful activities. On the side panels of the tractor, the motto of C.I.S.F. 'Sanrakshan evam Suraksha' is visible. On the trailer, the different security related activities performed by CISF are portrayed viz. the security services at the airport, passengers being frisked by hand held metal detector, luggage being scanned through the X-Ray Baggage Inspection System. In the rear portion, we have some personnel wearing the fire safety and anti-radiation suits. We can see the Bomb Detection and Disposal Squad with their equipments along with a dog squad.

Ministry of Home Affairs (C.I.S.F.)

30

नन्हीं दुनिया

झांकी के माध्यम से केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने बच्चों को दिखाकर उनकी दुनिया का एक प्रतिरूप दिखाने का प्रयास किया है। ट्रैक्टर पर पृष्ठभूमि में, एक प्रसन्नचित बालक और बालिका को एक प्यारे खरगोश के साथ दिखाया गया है। बहुत से फिसलने वाले फलक, झूले और खेल की मुद्रा में बच्चे पूरे ट्रेलर पर फैले हुए दिखाए गए हैं। ट्रेलर के दोनों तरफ के पैनलों पर पंचतंत्र की एक सुप्रसिद्ध कहानी दर्शायी गई है। कहानी में एक खरगोश और एक कछुए को दौड़ में भाग लेते हुए दिखाया गया है जिसमें कछुआ दौड़ में आगे निकल जाता है। जबकि खरगोश और अन्य जानवर दौड़ को देखते हुए दिखाए गए हैं। कहानी की शिक्षा है 'धीमे और सतत् प्रयास से सफलता मिलती है'।

झांकी को सजाने और बच्चों की मासूमियत को प्रकट करने के लिए प्राकृतिक फूलों का बहुतायत में प्रयोग हुआ है। बच्चे और अभिभावकों के चरित्र वास्तविक हैं तथा कार्टून चरित्र और अन्य वस्तुओं को फूलों के डिजाइन से बनाया गया है।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

Nanhi Duniya

Through their tableau, the Central Public Works Department (C.P.W.D.) depicts the children in their moods. On the tractor, a happy boy and a girl with a pet rabbit in the background are seen. A number of slides, swings and children in playful moods are shown all over the trailer. On the both side panels of the trailer, a famous Panchtantra story has been described. The story goes thus: a rabbit and a tortoise take part in a race and the tortoise leading the rabbit, while other animals are watching the race. The moral of the story is "slow and steady wins the race".

Natural flowers are lavishly used to decorate the tableau and to express the innocence of the children. Children and parents characters are live, while the cartoon characters and other things are created out of floral designs.

Central Public Works Department

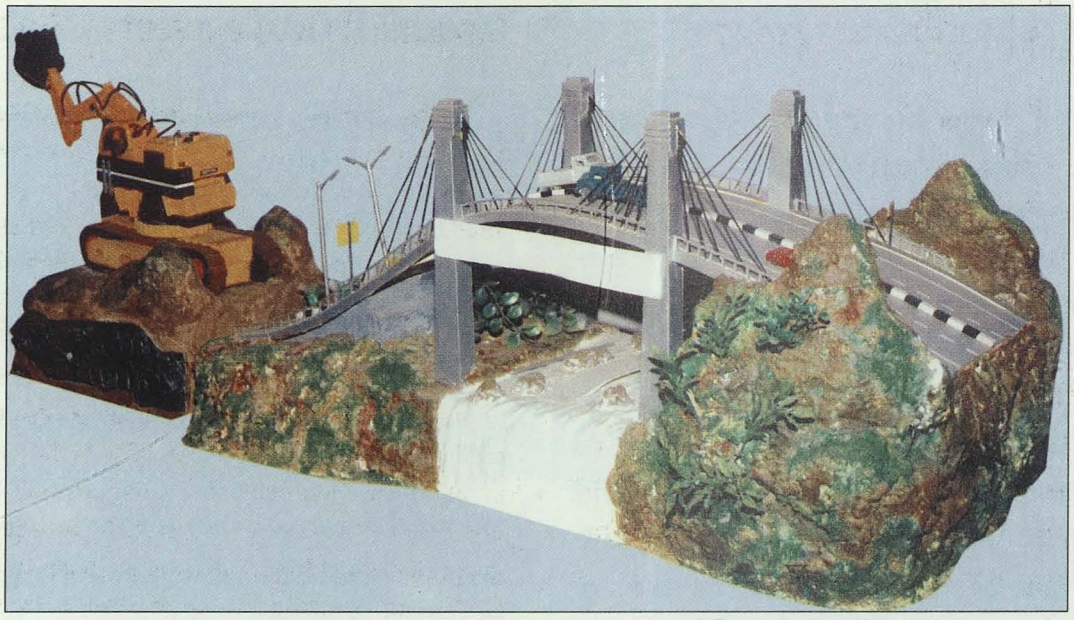

राष्ट्रीय राजमार्ग

कभी इस कार्य की शुरुआत करने वाला देश भारत अब उन्नति की राह पर अग्रसर है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण एक तरह से भारत के इस अभियान को शक्ति प्रदान कर रहा है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण देश के आधुनिक राजमार्गों पर अंतर्राष्ट्रीय मानक यात्रा गुणवत्ता और सुरक्षा विशेषताओं को उपलब्ध कराकर सड़क यात्रा को पुनः परिभाषित कर रहा है।

झांकी पर दर्शाया गया खनित्र निर्माण के अत्यन्त शक्तिशाली और सुस्पष्ट निर्माण का प्रतीक है। इसमें स्वतंत्र भारत के सबसे बड़े राजमार्ग विकास कार्यक्रम को कार्यान्वित किए जाने का निरुपण किया गया है। दिसंबर 2000 से पहले, राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना के अधीन भारत में चार लेन वाले राजमार्ग केवल 1053 कि.मी. के थे। आज हमारे पास 6800 कि.मी. के चार और छह लेन के उत्तम राजमार्ग हैं जो 6 वर्षों की अवधि में 6000 कि.मी. से अधिक बने हैं। झांकी के पिछले भाग में परिष्कृत ढांचा दिखाया गया है। यह प्रतीकात्मक संरचना भारत के सड़क अवसंरचना विकास के प्रयासों की कहानी प्रदर्शित करती है जिसे देश की आर्थिक प्रगति को गति प्रदान करने वाले कारक के रूप में देखा जा सकता है।

पोत, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (भा.रा.रा.प्रा.)

National Highways

From a country that was once on the move, India is now on the go. And, in some ways, powering India's drive is the National Highways Authority of India (NHAI). Silently, National Highways Authority of India is redefining road travel by providing international standard riding quality and safety features on the country's modern highways.

A replica of Excavator on the tractor symbolises the most powerful and visible tool of construction. It represents the undertaking of the largest highways development programme in independent India. Before December 2000, under National Highways Development Project, India had only 1053 kms of four-lane highways. Today we have 6800 kms of smooth four and six lane highways, which is an increase of more than 6000 kms in 6 years. The trailer showcases finished structure. This symbolic composition portrays the story of India's road infrastructure development efforts, seen as the accelerator of the country's economic growth.

Ministry of Shipping, Road Transport & Highways (N.H.A.I.)

32

पूर्वोत्तर का एकीकृत विकास

इस झांकी में पूर्वोत्तर के सात सीमावर्ती राज्यों की समृद्धि का प्रत्यक्ष प्रदर्शन है। इस झांकी में इन लोगों की परम्पराओं और प्रकृति के निकट रहकर जीने और आधुनिक भारत के साथ आगे बढ़ते हुए प्रगति करने का जीवंत वर्णन है।

झांकी के अग्रभाग में, सात महिलाओं की विशालकाय मूर्तियां दिखाई गई हैं जिनमें से प्रत्येक पूर्वोत्तर के एक राज्य का प्रतिनिधित्व करती है। प्रत्येक महिला को उनकी पारम्परिक वेशभूषा और आभूषणों में दिखाया गया है। इन सभी महिलाओं के चेहरों के भाव खुशहाली और मनमोहक सौंदर्य की छाप छोड़ते हैं। झांकी के पिछले भाग में अभिभूत कर देने वाला हरा रंग पूर्वोत्तर के प्राकृतिक सौंदर्य को बिखेर रहा है। कुछ ट्रांसमिशन टावरों के साथ एक बांध दिखाया गया है जो बिजली के क्षेत्र में इन राज्यों की आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। वन क्षेत्र भी पूर्वोत्तर के वन्य जीवन के साथ–साथ इस क्षेत्र की कृषि समृद्धि को दर्शाता है। झांकी के संपूर्ण भाग में सूर्य की पृष्ठभूमि दर्शाई गई है जो उदीयमान नये और आधुनिक भारत का प्रतीक है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय

Integrated Development of North East

The tableau is a visual presentation of the richness of the seven sister states of the North East as they have come to be famous for. The Tableau brings alive the traditions and close to nature living of these people and the progress they have made marching along with modern India.

The tractor portion displays the larger than life sculpture of the seven women each representing a State of the North East. Each woman is shown in her traditional dress and ornaments. The facial expressions of all these women leave a happy and charming impression. The trailer section with an overwhelming green shade highlights the natural beauty of the North East. A dam leading to some transmission towers highlight the self sufficiency these States have come to achieve in the power sector. The forest area also shows the wild life of North East, along with the agricultural richness of the region. The entire trailer section is shown in the backdrop of a sun which stands as a symbol of the dawn of a new and modern India.

Ministry of Development of North Eastern Region

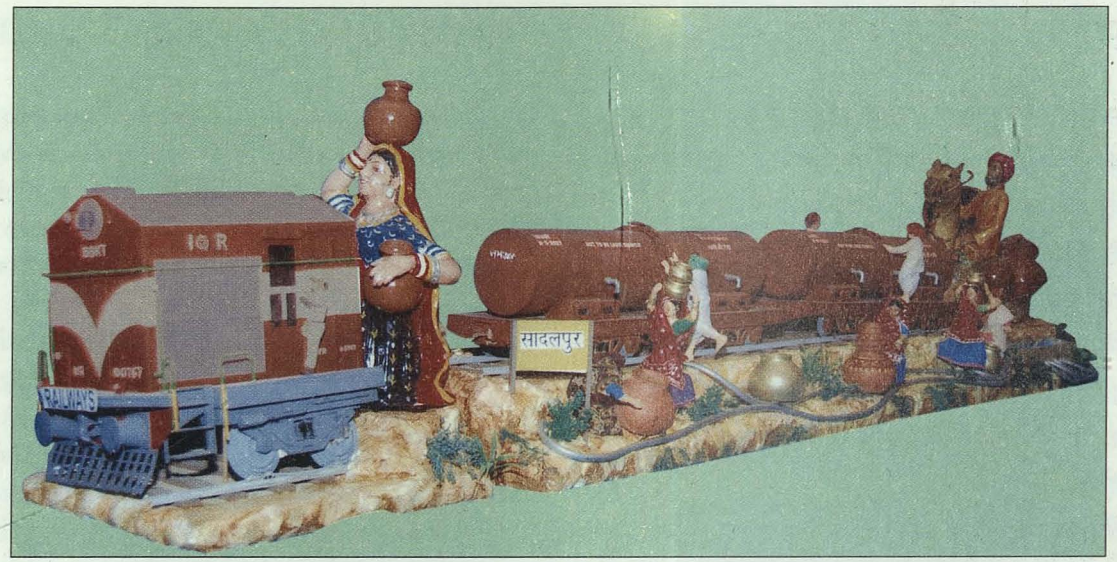

राजस्थान/गुजरात के रेगिस्तानी इलाकों हेतु पानी की विशेष रेलगाड़ियां

आम आदमी के लिए परिवहन की मुख्य विधा के रूप में भारतीय रेल ने राष्ट्र की आर्थिक जीवनरेखा के रूप में और रेलवे लाइनों के आसपास के क्षेत्रों में रह रहे लोगों की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार की समाज सेवा के दायित्वों को पूरा करने हेतु राष्ट्र के जीवन में साधन के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। देश के पश्चिमी क्षेत्र, राजस्थान और गुजरात में पीने के पानी की कमी वहां के जनजीवन की मूलभूत सच्चाई है और जीने के लिए वहां के स्थानीय लोग मीलों दूर से पीने का पानी ढोते हैं।

भारतीय रेल नसीराबाद–फुलेरा–पीपली का बास और नसीराबाद–विजयनगर (अजमेर मंडल), जवाइबंद–पाली (अजमेर और बीकानेर मंडल), खाटू–दिगाना और भगत की कोठी–लूनी (जोधपुर मंडल), हिसार–सादुलपुर (बीकानेर मंडल), विरामगाम–ओखा (राजकोट मंडल) जैसे इन कुछ क्षेत्रों में जलापूर्ति के लिए विशेष रेलगाड़ियां चलाकर राष्ट्र की महत्वपूर्ण सेवा कर रही हैं। जलाशयों से टैंक वैगनों में पानी ढोती हुई ये विशेष रेलगाड़ियां लाखों प्यासे लोगों की प्यास बुझा रही हैं। भारतीय रेल की इस झांकी में राष्ट्र के प्रति रेल की उल्लेखनीय सेवा का चित्रण किया गया है।

रेल मंत्रालय

Water Special Trains for Desert Areas of Rajasthan/Gujarat

As the principal mode of transport for the common man, the Indian Railways has also played a pivotal role in the life of the nation, as an economic lifeline of the nation and as an instrument for fulfilling a variety of social service obligations for meeting the diverse requirements of the people residing in areas along which the railway lines snake through. In the western region of the country, in the States of Rajasthan and Gujarat, scarcity of drinking water is a basic fact of life and in order to survive, the local population trudges several miles a day to collect the drinking water.

The Indian Railways by operating water special trains in some of these areas such as Nasirabad-Phulera-Peeplee Ka Bas and Nasirabad-Bijaynagar (Ajmer Division), Jawaiband-Pali (Ajmer and Bikaner Divisions), Khatu-Degana and Bhagat Ki Kothi-Luni (Jodhpur Divisioin), Hissar-Sadulpur (Bikaner Division), Viramgam-Okha (Rajakot Division) has been doing an important service to the nation. The water special trains carrying the water in the tank wagons from the reservoirs are quenching the thirst of millions of thirsty people. The tableau of the Indian Railways depicts the yeoman service of the railways towards the nation.

Ministry of Railways

34

सत्याग्रह के 100 वर्ष

जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में 11 सितंबर, 1906 को एक ऐसा आन्दोलन शुरू हुआ था जिसने मानव इतिहास बदलकर रख दिया। भारत के एक युवा वकील, मोहनदास कर्मचन्द गांधी ने ब्रिटिश कालोनियों में प्रचलित घोर जातिवादी निरंकुशता के विरुद्ध अपनी आवाज उठाने का साहस किया। इस प्रकार सत्याग्रह का जन्म हुआ था। सत्याग्रह एक ऐसा अद्वितीय आन्दोलन है जिसे विश्व में कइयों ने सामाजिक अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए सफलतापूर्वक अपनाया है। सत्याग्रह दो शब्दों अर्थात् सत्य और आग्रह के संयोग से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है सत्य का पथ जो निरंकुशता का विरोध करने का सक्रिय किन्तु अहिंसक मार्ग है। महात्मा गांधी का कथन : "...अंग्रेजी में सत्याग्रह का उल्लेख– निष्क्रिय विरोध के रूप में किया जा सकता है। यह शब्द वैयक्तिक रूप से पीड़ा सहन करके, अधिकार प्राप्त करने के तरीके को दर्शाता है; यह शस्त्र द्वारा विरोध के विपरीत है... यह शारीरिक शक्ति नहीं है बल्कि यह आत्मा की शक्ति है...।" यह मानवता को गांधी जी की ऐसी देन थी जिसे तब तक विश्व नहीं जानता था।

झांकी के अग्रभाग में गांधी जी को अतुलीय नेता के रूप में दर्शाया गया है। ट्रेलर पर सत्याग्रह आन्दोलन के दृश्य दिखाए गए हैं। संस्कृति मंत्रालय की यह झांकी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को उनकी बड़ी शिक्षाओं : सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के प्रति श्रद्धांजलि है और जिनकी आज भी विश्व में प्रासंगिकता बनी हुई है।

संस्कृति मंत्रालय

100 Years of Satyagraha

On September 11, 1906, a movement was launched in Johannesburg (South Africa) that changed the human history. A young lawyer from India, Mohandas Karamchand Gandhi, dared to raise his voice against the blatant racism rampant in the British colonies. Thus, Satyagraha was born. Satyagraha – a unique movement has been adopted successfully by many around the world to resist social injustice and oppression. Satyagraha is formed by the union of two words – truth (satya) and agraha (firmness). It literally means the path of truth that implies active yet non-violent resistance to the oppression. To quote the Mahatma Gandhi, "...Satyagraha is referred to in English as passive resistance. The term denoted the method of securing rights by personal suffering; it is the reverse of resistance by arms....it is not body force, but soul force...". This was Gandhiji's gift to mankind, hitherto unknown to the world.

On the tractor, Gandhiji is shown as a leader unparalleled. On the trailer, a series of Satyagraha movements is depicted. The tableau of Ministry of Culture is a rich tribute to the Father of the Nation, Mahatma Gandhi for his great teachings of truth, non-violence and Satyagraha which have relevance in the present day world too.

Ministry of Culture

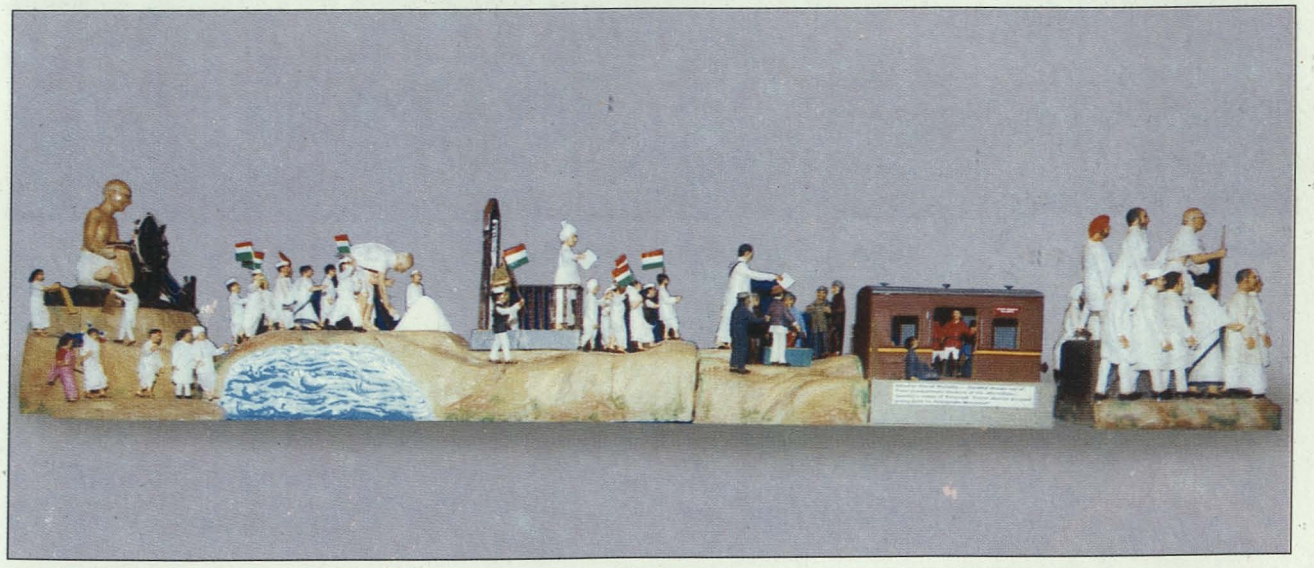

35

बच्चों की प्रस्तुति

CHILDREN'S PAGEANT

वीरता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता - 2006

नाम	राज्य
कुमार वी. तेजा साई (मरणोपरांत)*	आंध्र प्रदेश
कुमार सी.वी.एस. दुर्गा दूंदेश्वर (मरणोपरांत)*	आंध्र प्रदेश
कुमारी वन्दना यादव**	उत्तर प्रदेश
कुमारी अस्मा अयूब खान***	महाराष्ट्र
कुमारी सुशीला गुर्जर***	राजस्थान
कुमारी शिल्पा जनबंधु***	छत्तीसगढ़
कुमारी दीपा कुमारी	राजस्थान
कुमार मनोज चोहान (मरणोपरांत)	मध्य प्रदेश
कुमार डेविड कीनु	अरुणाचल प्रदेश
कुमार माइकल एन. जार्ज	नई दिल्ली
कुमार पार्थ एस. सुतारिया	महाराष्ट्र
कुमारी पुष्पा	छत्तीसगढ़
कुमारी अनिता सिंह लोध	मध्य प्रदेश
कुमारी कशिका सिंह	चण्डीगढ़
कुमारी पोनम बेबीरोज देवी	मणिपुर
कुमार सुधीर जाखड़	राजस्थान
कुमार पवन कुमार पाराशर	राजस्थान
कुमार सौरभ राजवाडे	छत्तीसगढ़
कुमारी पूजा कबडवाल	उत्तराखण्ड
कुमार राहुल चौरसिया	उत्तर प्रदेश
कुमारी अंतरा राजू श्रीवास्तव	महाराष्ट्र
कुमार जोएल सलीम जैकब	केरल
कुमार राजेन्द्र कुमार	राजस्थान
कुमारी अंकिता अशोक भोसले	महाराष्ट्र

* संजय चोपड़ा पुरस्कार

** गीता चोपड़ा पुरस्कार

*** बापू गयाधानी पुरस्कार

Winners of the National Award for Bravery – 2006

Name	State
Master V. Teja Sai (Posthumous)*	Andhra Pradesh
Master C.V.S. Durga Doondieswar (Posthumous)*	Andhra Pradesh
Km. Vandana Yadav**	Uttar Pradesh
Km. Asma Ayyub Khan***	Maharashtra
Km. Sushila Gurjar***	Rajasthan
Km. Shilpa Janbandhu***	Chhattisgarh
Km. Deepa Kumari	Rajasthan
Master Manoj Chohan (Posthumous)	Madhya Pradesh
Master David Kino	Arunachal Pradesh
Master Michael N. George	New Delhi
Master Parth S. Sutaria	Maharashtra
Km. Pushpa	Chhattisgarh
Km. Anita Singh Lodh	Madhya Pradesh
Km. Kashika Singh	Chandigarh
Km. Paonam Babyrose Devi	Manipur
Master Sudhir Jakhar	Rajasthan
Master Pavan Kumar Parashar	Rajasthan
Master Sourabh Rajwade	Chhattisgarh
Km. Pooja Kabadwal	Uttarakhand
Master Rahul Chourasia	Uttar Pradesh
Km. Antara Raju Srivastava	Maharashtra
Master Joel Salim Jacob	Kerala
Master Rajender Kumar	Rajasthan
Km. Ankita Ashok Bhosale	Maharashtra

* **Sanjay Chopra Award**

** **Geeta Chopra Award**

*** **Bapu Gayadhani Award**

स्कूली बालक और बालिकाओं द्वारा बैंड

बच्चों की यह सांस्कृतिक प्रस्तुति 'सारे जहां से अच्छा' धुन बजाते हुए बालक और बालिकाओं के बैंड के नेतृत्व में आगे बढ़ रही हैं। इस बैंड में दिल्ली के निम्नलिखित स्कूलों के बच्चे भाग ले रहे हैं :

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सर्वोदय विद्यालय, प्रेसीडेंट्स एस्टेट; श्री गुरु तेग बहादुर गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, शीशगंज, चांदनी चौक; गुरु नानक गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सब्जी मंडी, घण्टाघर; दशमेश पब्लिक स्कूल, विवेक विहार; जैन समनोपासक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सदर बाजार; एस.एम. जैन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कमला नगर; महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल, अशोक विहार; कमल मॉडल स्कूल, मोहन गार्डन; विवेकानंद पब्लिक स्कूल, आनंद विहार; रेयान इंटरनेशनल स्कूल, सैक्टर–24, रोहिणी; महाराजा अग्रसेन मॉडल स्कूल, पीतमपुरा; सी.आर.पी.एफ. सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सैक्टर–14, रोहिणी और गुरु हरिकिशन पब्लिक स्कूल, हेमकुंट कालोनी।

ध्वज वाहक - बालक और बालिकाएं

मार्च–पास्ट में भाग ले रहे बच्चे दिल्ली के निम्नलिखित स्कूलों से हैं :

सर्वोदय कन्या विद्यालय, समालका; सर्वोदय कन्या विद्यालय, माता सुन्दरी रोड; सर्वोदय कन्या विद्यालय, रिठाला; उपदेश कौर गवर्नमेंट गर्ल्स सेकेंडरी स्कूल, दरयापुर; गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सैक्टर–4, डॉ. अम्बेडकर नगर; जी.आर.एम. स्कूल, निलोठी मोड; सचदेवा पब्लिक स्कूल, रोहिणी; मदर डिवाइन पब्लिक स्कूल, सैक्टर–3, रोहिणी; न्यू स्टेट एकेडमी, पीतमपुरा; गवर्नमेंट बॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल–1, मॉडल टाउन; सलवान बॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, न्यू राजेन्द्र नगर; दशमेश पब्लिक स्कूल, आनंद विहार; विवेकानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, आनंद विहार; न्यू ग्रीनफील्ड स्कूल, साकेत; हिमालय पब्लिक स्कूल, रोहिणी; माउंट आबू पब्लिक स्कूल, सैक्टर–5, रोहिणी; और होली कान्वेंट स्कूल, हस्तसाल।

Band by School Girls and Boys

The cultural pageant of children is heralded by a Band Contingent of girls and boys playing the tune "Sare Jahan Se Achchha". Children participating in the Band are drawn from the following Schools of Delhi:

Dr. Rajendra Prasad Sarvodaya Vidyalaya, President's Estate; Shri Guru Teg Bahadur Girls Senior Secondary School, Sis Ganj, Chandni Chowk; Guru Nanak Girls Senior Secondary School, Subzi Mandi, Ghanta Ghar; Dashmesh Public School, Vivek Vihar; Jain Samnopasak Senior Secondary School, Sadar Bazar; S. M. Jain Senior Secondary School, Kamala Nagar; Maharaja Agrasen Public School, Ashok Vihar; Kamal Model School, Mohan Garden; Vivekanand Public School, Anand Vihar; Ryan International School, Sector-24, Rohini, Maharaja Agrasain Model School, Pitam Pura; CRPF Senior Secondary School, Sector-14, Rohini and Guru Harkishan Public School, Hemkunt Colony.

Flag Bearers – Girls and Boys

The children participating in the March Past are drawn from the following Schools of Delhi:

Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Samalka; Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Mata Sundari Road; Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Rithala; Updesh Kaur Govt. Girls Senior Secondary School, Daryapur; Government Girls Senior Secondary School, Sector - 4, Dr. Ambedkar Nagar; G.R.M. School, Nilothi More; Sachdeva Public School, Rohini; Mother Divine Public School, Sector-3, Rohini; New State Academy, Pitampura; Government Boys Senior Secondary School-I, Model Town; Salwan Boys Senior Secondary School, New Rajender Nagar; Dashmesh Public School, Anand Vihar; Vivekanand Senior Secondary School, Anand Vihar; New Green Field School, Saket; Himalaya Public School, Rohini; Mount Abu Public School Sector-5, Rohini; and Holy Convent School, Hastsal.

वंदे मातरम्

भारत माता हम सभी को प्रेरित करती है और विश्वबंधुत्व भाईचारे, विश्वशान्ति और सौहार्द बढ़ाने में हमारी सहायता करती है। सर्वोदय कन्या विद्यालय, उत्तम नगर, नई दिल्ली की बालिकाएं 'वंदे मातरम्' नृत्य को प्रस्तुत कर रही हैं। यह नृत्य हमारे तिरंगे राष्ट्रध्वज के महत्व को परिभाषित करता है। केसरिया रंग हमारी वीरता और बलिदान का प्रतीक है। जबकि सफेद रंग शान्ति और विश्वबंधुत्व के प्रति हमारे प्यार का प्रतीक है। हरा रंग खुशहाली और समृद्धि का प्रतीक है। झण्डे के बीच में नीला चक्र हमारी प्रगति और ऊर्जा का प्रतीक है। अपनी प्रस्तुति के माध्यम से सर्वोदय कन्या विद्यालय की बालिकाएं भारतवासियों की ओर से राष्ट्रीय ध्वज को नमन कर रही हैं और प्रतिज्ञा कर रही हैं कि वे इसका सम्मान बनाए रखने के लिए सदा तत्पर रहेंगी।

Vande-Matram

Mother India inspires all of us and helps us in promoting universal brotherhood, global peace and harmony. The girls of Sarvodya Kanya Vidyalaya, Uttam Nagar, New Delhi are presenting a dance "Vande-Matram". The dance describes the importance of our national flag, tri-colour. Saffron colour is symbolic of our bravery and sacrifice. White colour symbolises our love for peace and universal brotherhood. Green colour is symbolic of happiness and prosperity. The blue chakara in the middle of the flag is the symbol of our progress and dynamism. Through their presentation, the girls of Sarvodya Kanya Vidyalaya are making a pledge that they will always strive to protect its honour.

नटवरी नृत्य

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद के विद्यार्थी उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के एक प्रसिद्ध नृत्य रूप 'नटवरी नृत्य' की प्रस्तुति कर रहे हैं। 'बृज रास' के रूप में भी जाना जाने वाला यह नटवरी नृत्य भगवान श्री कृष्ण की जीवनी पर आधारित है और इसे जन्माष्टमी, दशहरा और दीपावली जैसे महत्वपूर्ण अवसरों के दौरान मंचित किया जाता है।

Natvari Nritya

The students of North Central Zone Cultural Centre, Allahabad are presenting the Natvari Nritya, a popular dance form from the Awadh region of Uttar Pradesh. Natvari dance also known as 'Brijraas', is based on the life of Lord Shri Krishna and is performed during auspicious occasions like Janmashtami, Dussehra and Deepawali.

आओ स्कूल चलें

सर्वोदय कन्या विद्यालय नं. 1 शक्ति नगर, दिल्ली के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नृत्य शिक्षा से वंचित लाखों बच्चों का आह्वान है। इस नृत्य में उन्हें उदीयमान हुए सूर्य की पहली किरणों के साथ स्कूल जाने के लिए तैयार करना दिखाया गया है।

Aao School Chalein

This dance presented by the students of Sarvodaya Kanya Vidyalaya No. 1, Shakti Nagar, Delhi, is an invocation to the millions of children deprived of education. It is to make them ready for the school with the first rays of the rising sun.

39

देवरी बिहू

असम में यह बिहू मुख्य रूप से देवरी समुदाय द्वारा मनाया जाता है। देवरी, नदी की तटवर्ती जाति है जो अपनी परम्परा, धार्मिक आस्थाओं और पद्धतियों को संरक्षित और संजोए रखते हैं। देवरी वर्ष के दौरान अपने दो प्रमुख त्योहारों अर्थात् 'बोहाग बिहू' या 'भोहागियो बीसू' और 'माघ बिहू' अथवा 'माघियो बिहू' को मनाते हैं। नृत्य रूप लोगों के कृषि संबंधी कार्यों के साथ जुड़े हुए हैं। पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता के विद्यार्थी 'देवरी बिहू' की प्रस्तुति कर रहे हैं।

कठपुतली नृत्य

कठपुतली नृत्य आज के उच्च प्रोद्योगिकी के विश्व में अपना स्थान कायम रखे हुए है, यह भावनाओं और विचारों, मनोरंजन और शिक्षा को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बना हुआ है। इसका कारण इस नृत्य की सरलता, प्रभाविकता, जिज्ञासा के तत्व, कम लागत और अंतर्निहित कहानी कहने का तरीका है, जो अभी भी युवा मस्तिष्क को मंत्रमुग्ध करता है। कलकत्ता में पूरन भट्ट बंगापुतुल द्वारा आकार, भारतीय लोककला मण्डल उदयपुर, साहित्य कला मण्डल मुंबई, कलकत्ता कठपुतली थिएटर जैसे विभिन्न संगठन साक्षरता अभियान, सरकारी नीतियों के प्रचार–प्रसार, विकलांग और अनपढ़ लोगों के लिए प्राथमिक शिक्षा, महिला सशक्तिकरण के लिए एक माध्यम के रूप में इस कला का उपयोग किया जा रहा है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, प्रेसीडेंट्स एस्टेट के छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा यह रंगबिरंगा दृश्य राजस्थान की मरूभूमि की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का स्मरण कराता है।

खरिंग खरक फेचक

'खरिंग खरक फेचक' एक प्राचीन नृत्य रूप है जिसका शाब्दिक अर्थ 'आजिविका का नृत्य' है। यह नृत्य अतिप्राचीन समय से मणिपुर के उर्खरुल जिले में बसे टांगखुल नागा के पश्चिम दिशा में स्थित एक गांव तलुई के नागरिकों द्वारा किया जाता है। यह नृत्य–रूप आदिवासियों में वीरता, गौरव, आत्मनिर्भरता, कठोर कार्य और 'कार्य संस्कृति' के प्रति सम्मान की भावना जागृत करता है। यह नृत्य रूप पारम्परिक कहावत को कार्यात्मक रूप में इस प्रकार कहने की परिकल्पना भी करता है कि **'थांग फुंगलो, ल्यू–वोलो, नालेइरांडा राड पामले'** जिसका अर्थ है **'जलाने की लकड़ी ले जाओ, खेतों में कड़ी मेहनत करो, वहां मिट्टी में चावल है'**। युवा लड़के और लड़कियां अपने जोड़ीदारों को चुनती हैं और इस नृत्य रूप के माध्यम से कार्य करने की भावना को गति प्रदान करती हैं। वास्तविक कार्य के दौरान नृत्य करने के साथ ही साथ वे शारीरिक क्रिया के साथ एक साथ लयबद्ध रूप से तालियां बजाती हैं और गाना गाती हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर के छात्र **'खरिंग खरक फेचक'** की प्रस्तुति कर रहे हैं।

Deori Bihu

This Bihu is mainly observed by the Deori community in Assam. The Deories are a riverine tribe which preserves and maintains their tradition, religious beliefs and practices. The Deories celebrate two major festivals during a year, viz. 'Bohag Bihu' or 'Bhohagiyo Bisu' and 'Magh Bihu' or 'Magiyo Bisu'. These dance forms are interlinked with agriculture related activities of the people. The students of the Eastern Zone Cultural Centre, Kolkata are presenting the 'Deori Bihu'.

Puppet Dance

Puppet Dance (Kathputli Nritya) etches out its place so emphatically even in today's hi-tech world. It remains a powerful medium of expression of feelings and thoughts, entertainment and education. The reason is its simplicity, effectiveness, elements of curiosity, low cost and the underlying story-telling format, which still fascinates young minds. Various organisations like Aakar of Puran Bhatt, Bangaputul in Kolkata, Bhartiya Lok Kala Mandal in Udaipur, Sahitya Kala Mandal in Mumbai and Calcutta Puppet Theatre have been using this art as a medium for literacy mission, propagation of government policies, primary education for handicapped and slow learners, women's empowerment and so on. The colourful vista being presented by the students of Dr. Rajender Prasad Senior Seccondary School, President's Estate, New Delhi is reminiscent of the rich cultural heritage of the desert land of Rajasthan.

Kharing Kharak Pheichak

'Kharing Kharak Pheichak' literally meaning "Dance of Livelihood", is an ancient dance form. This dance is performed by the residents of Talui, a village in the western side of the Tangkhul Naga inhabited district of Urkhrul, Manipur since times immemorial. This dance form evokes the sense of bravery, pride, self reliance, hard work and respect for work culture in the tribals. The dance form also emphasises the traditional saying through action which goes, **"Thang phunglo, lew-wolo, ngaleiranda rad pamle"** meaning **"Carry firewood, toil in the fields, there is rice in the soil"**. The young boys and girls choose their partners and gear up the spirit to work through this dance form. While dancing as well as during the actual work, they chant and sing songs rhythmically in synchronisation with the physical action. The students of the North East Zone Cultural Centre, Dimapur are presenting 'Kharing Kharak Pheichak'.

40

एकता की रंगोली

रंगोली – विभिन्न रंगों का मिश्रण, भारतीय मानस में विविधता में एकता के सन्देश की प्रतिगूंज है। रंगोली जो एकता और विश्वास से संबंधित हमारी वर्षों पुरानी समृद्ध लोक संस्कृति से संबंधित एक पारम्परिक कला है न केवल भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है, अपितु देश की एकता के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत भी है। कमल मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मोहन गार्डन और वंदना इन्टरनेशनल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, द्वारका के छात्रों की यह मनोहारी प्रस्तुति प्यार, भाईचारे और राष्ट्रीय एकता का सन्देश देती है।

Ekta Ki Rangoli

Rangoli, a mixture of different colours echoes the message of unity in diversity inherent in the Indian psyche. Rangoli, a tradition of art, integration and faith related to our age old rich folk culture is not only a medium of expressing emotions and thoughts but also a source of inspiration for the unity of the country. The charming presentation by the students of Kamal Model Senior Secondary School, Mohan Garden and Vandana International Senior Secondary School, Dwarka gives the message of love, brotherhood and national unity.

गैडी नृत्य

छत्तीसगढ़ में बस्तर के आदिवासी मारिया गोंड प्रतिबद्ध नर्तक होते हैं क्योंकि वे अपने जीवन में प्रत्येक उल्लेखनीय अवसरों पर नृत्य करते हैं। उनके उत्तेजक नृत्यों में से एक नृत्य 'गैडी' संतुलित और चपल पदताल के लिए पैरबाँसा स्वर पर किया जाने वाला नृत्य है जोकि फसल कटाई ऋतु के दौरान किया जाता है। युवा पुरुष नर्तक अपने सिर के चारों ओर कौड़ी के खोल से सुसज्जित बेल्टों को पहनते हैं। कमर के चारो ओर बंधे हुए सींग बाजा, तुरही और मांदर से लयबद्ध स्वरलहरियां निकलती हैं। दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर के छात्र इस आदिवासी गैडी नृत्य को प्रस्तुत कर रहे हैं।

Gedi Nritya

The Maria Gond tribals of Baster in Chhattisgarh are committed dancers for they dance on every occasion of significance in their life. One of their most exciting dances 'Gedi', a dance on stilts noted for balancing and clever footwork, is performed during the season of grains scraping. The young male dancers are wearing belts studded with cowerie shells around the head. The rhythmic beats are of Seeng-baja, Turahi and Mandar tied around the waist. The students of South Central Zone Cultural Centre, Nagpur are presenting the tribal Gedi Nritya.

कन्नीयारकली

कन्नीयारकली केरल के सबसे प्रसिद्ध लोक नृत्यों में से एक नृत्य है। यह लोक नृत्य, विशु त्योहार के दौरान भगवती मन्दिर के सामने किया जाता है। गांव के लोग किसी जातीय अथवा नस्लीय भेद–भाव के बिना इकट्ठे होते हैं और उत्साहपूर्ण तरीके से कन्नीयारकली त्यौहार मनाते हैं। विभिन्न नृत्यों के लिए अलग–अलग साज–श्रृंगार का उपयोग करते हुए इसे तालबद्ध और तेज गति के कदमों से किया जाता है। वेदनपुरात्तु, कोट्टाकोडेनकी, वादिथाल्लु, चाक्किलियान, परायन इत्यादि कन्नीयारकली के मुख्य भाग हैं। इस नृत्य के लिए सामान्यतः चेंडा, एलाथाल्लम, चेंगिला और मधलम जैसे वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजावुर के छात्र केरल के इस मनोहारी लोक–नृत्य को प्रस्तुत कर रहे हैं।

Kanniyarkali

Kanniyarkali is one of the most famous folk dances of Kerala. The folk dance is performed in front of the Bhagavathy Temple during the Vishu Festival. The village people gather together without the distinction of caste or creed and enthusiastically celebrate Kanniyarkali Festival. It has rhythmic and fast moving steps using different costumes for various dances. Vedanpurattu, Kottakodenky, Vadithallu, Chakkiliyan, Parayan etc. are the main parts of Kanniyarkali. The musical instruments of Chenda, Elathallam, Chengila and Madhalam are generally played for this dance. Students from South Zone Cultural Centre, Thanjavur are presenting the beautiful folk dance of Kerala.

राष्ट्र–मण्डल खेल

राष्ट्र–मण्डल खेल प्रत्येक चार वर्षों में एक बार आयोजित किए जाते हैं। भारत, वर्ष 2010 में उन्नीसवां राष्ट्रमण्डल खेल आयोजित कर रहा है। राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, द्वारका, नई दिल्ली के छात्र अपनी इस प्रस्तुति में यह विश्वास दिला रहे हैं कि हम इस महान दिवस के लिए पूर्णतया तैयार हैं। हम अपने विदेशी अतिथियों का अभूतपूर्व अभिनन्दन करने के लिए उत्तम प्रयास करेंगे। हम विश्व को दिखा देंगे कि हम विश्वस्तरीय प्रतियोगिताओं को सफलतापूर्वक आयोजित करने में कैसे सक्षम हैं। हम अपने प्रयासों में निश्चित रूप से सफल होंगे।

Commonwealth Games

Commonwealth Games are held once in four years. India would host the nineteenth Commonwealth Games in 2010 at New Delhi. In their presentation, the students of Rajkiya Pratibha Vikas Vidhyalaya, Dwarka, New Delhi are promising our preparedness for the big day. We will put in our best efforts to welcome our foreign guests like never before. We will let the world know how best we can organise the mega event. We will definitely succeed.

Tara Art Printers Pvt. Ltd., New Delhi